अंक : चतुर्थ मूल्य : अमूल्य अक्टूबर से दिसम्बर 2025

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार की प्रस्तुति

यात्रा लिंगराज मंदिर की

विविध

ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए QR कोड को स्कैन करें

SCAN ME

शिक्षक-गाथा

छात्र-गाथा

विद्यालय-गाथा

www.teachersofbihar.org

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

अक्टूबर से दिसम्बर 2025

"प्रज्ञानिका" त्रैमासिक पत्रिका है। जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार की तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। बिहार के शिक्षकों द्वारा इसे प्रकाशित किया गया है।इसमें शिक्षकों के विभिन्न शैक्षणिक कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका प्रकाशन अथवा प्रसारण वर्जित है।

इस पत्रिका का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।

प्रज्ञानिका 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।

पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। इसके साथ ही प्रकाशित हर सामग्री की ज़िम्मेदारी लेखक के स्वयं की है।

पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

आवरण पृष्ठ छायाचित्र :संतोष कुमार,उत्क्रमित मध्य विद्यालय, रसियाही, बेगूसराय।

प्रधान संपादक

(चन्दन श्रीवास्तव)

सहायक आचार्य (शिक्षा),काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी

एवं शैक्षिक समन्वयक,भारतीय भाषा समिति,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संपादक

कुमारी निधि

प्रधान शिक्षिका, (राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त2025)
प्राथमिक विद्यालय बिरनाबाड़ी, किशनगंज

सह संपादक

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा0 उत्क्रमित मध्य विद्यालय दूधहन, रघुनाथपुर, सिवान

पाठ शोधक

डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय

राजकीय आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

तकनीकी सहयोग

शिवेंद्र प्रकाश सुमन

इंजीनियर, मुजफ्फरपुर

फाउंडर - सह - प्रेरणाश्रोत

एवं मार्गदर्शक

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय

नारायणपुर, बिक्रम, पटना

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

अक्टूबर से दिसम्बर 2025

प्रज्ञानिका टीम

मृत्युंजयम् कुमार

रंजेश कुमार

मधु प्रिया

पुष्पा प्रशाद

केशव कुमार

अजय कुमार मीत

मृत्युंजय कुमार

अभिषेक कुमार

प्रज्ञानिका गीत

प्रज्ञानिका – प्रज्ञा की प्रदीपिका

प्रज्ञानिका प्रखर प्रज्ञा की पुण्य प्रभा बिखेरती |
प्रज्ञानिका मनुज-बुद्धि की मणिधारा सहेजती ||

प्रज्ञानिका विमल विचारों का शशि-प्रभामंडल |
प्रज्ञानिका विद्या-वेद विचार मंडित ब्रह्मकमंडल ||

प्रज्ञानिका शिक्षक साधना का सुरम्य स्वरूप |
प्रज्ञानिका सृजन सन्निहित ज्ञान का अमर स्तूप ||

प्रज्ञानिका है रसगर्भित रसना की रचना-रश्मि |
प्रज्ञानिका है प्रेरणा-प्रदीप की प्रखर प्रभा प्रेमी ||

प्रज्ञानिका विचार-विस्तार की वाणी का वास |
प्रज्ञानिका में संस्कार-सुधा का अमोघ प्रकाश ||

प्रज्ञानिका सुधी-संपादकों का श्रम-दीप्त दर्पण |
प्रज्ञानिका में अंकित हर शब्द अमर-ज्ञान-तर्पण ||

प्रज्ञानिका है नवल नवोन्मेष की नित नव-धारा |
प्रज्ञानिका हमारी बौद्धिकता का उज्ज्वल सितारा ||

प्रज्ञानिका केवल पत्र नहीं, है प्रज्ञा की उपासना |
प्रज्ञानिका है साधना, गुरु-हृदय की गूढ़ भावना ||

लेखक – धनंजय कुमार धर्मेंद्र
विद्यालय – मध्य विद्यालय बम्हवार
प्रखंड – पीरो
जिला – भोजपुर

TEACHERS OF BIHAR
प्रज्ञानिका
अक्टूबर से दिसम्बर 2025

अनुक्रमणिका

संपादकीय 06

विद्यालय गाथा 08

शिक्षक गाथा 12

छात्र गाथा 17

डिजिटल दुनियां 18

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21

नवाचार 22

प्रज्ञनिका साहित्य 27

विविध 34

यात्रा लिंगराज मंदिर भुबनेश्वर

एक पेड़ माँ के नाम

करें योग रहे निरोग

सुर्खियां 39

फ़ोटो ऑफ द डे 40

प्रधान संपादक की कलम से

शिक्षण एक सृजनात्मक साधना है, जिसमें शिक्षक चाहे कक्षा के भीतर हों या समाज के मध्य, अपने चिंतन और कार्यों के माध्यम से निरंतर ज्ञान का नया आयाम गढ़ते रहते हैं। पर्यावरण संरक्षण जैसे वैश्विक विषय को बच्चों की समझ और सहभागिता से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है, और इस दिशा में बिहार के शिक्षक अपनी अभिनव विधियों, शैक्षिक सामग्री एवं रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। 'प्रज्ञानिका' की यह त्रैमासिक पत्रिका उसी सृजनात्मकता का जीवंत दस्तावेज़ है। इसके पर्यावरण विशेषांक में प्रकाशित शिक्षकों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ, प्रायोगिक अनुभव और प्रेरणादायी गतिविधियाँ पर्यावरण चेतना को जन-जन तक पहुँचाने का अद्वितीय प्रयास हैं। मैं उन सभी रचनाकार शिक्षकों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनकी सारगर्भित एवं प्रेरक रचनाओं से यह अंक समृद्ध हुआ है। साथ ही, प्रज्ञानिका संपादकीय टीम को भी विशेष अभिनंदन, जिन्होंने अपने परिश्रम, सूझबूझ और उत्कृष्ट संपादन कौशल द्वारा इस पत्रिका को न केवल ज्ञानवर्धक बनाया है बल्कि आकर्षक रूप में प्रस्तुत कर एक नई दिशा प्रदान की है।

मुझे विश्वास है कि 'प्रज्ञानिका' का यह अंक शिक्षार्थियों, शिक्षकों एवं समस्त पाठकों की सृजनशीलता को नई ऊँचाइयों तक प्रेरित करेगा और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सकारात्मक जन-जागरण का वाहक बनेगा। यह पत्रिका निरंतर इसी प्रकार ज्ञान-विस्तार और मौलिक चिंतन को नई दिशा देती रहे – यही शुभकामना है।

शुभकामनाओं सहित,

(चन्दन श्रीवास्तव)
सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संपादकीय

सम्मानित शिक्षक साथियों आप सभी को मेरा प्रणाम। "प्रज्ञनिका" का यह चतुर्थ अंक ले कर पुनः आप सभी के समक्ष उपस्थित हूँ। साथियों बिहार के हम सभी शिक्षक तल्लीनता के साथ अपना शैक्षणिक कार्य विद्यालयों में करतें हैं, और इसका उदाहरण हमें "प्रज्ञनिका" के विभिन्न अंकों में देखने को भी मिलता है। हर बार की तरह इस बार भी आप सभी के एक से बढ़ कर एक नवाचार हमें मिले। सभी को एक अंक में समेट पाना भी मुश्किल था। परंतु हमने कोशिश की है आपके अधिक से अधिक नवाचारों का संग्रह हम कर सकें। साथियों इस अंक में हमने एक विशेष स्तम्भ "एक पेड़ माँ के नाम से " को स्थान दिया है। आपके शब्द रूपेण मोतियों से हमने एक विचारों की माला तैयार की है। हमे पूर्ण विश्वास है कि प्रज्ञनिका का यह अंक आप सभी के मन को अवश्य भाएगा।

आप सभी यूँ ही "प्रज्ञनिका" को अपना प्रेम और स्नेह देते रहें। प्रज्ञनिका की पूरी टीम आपके बेहतर शैक्षणिक कार्यों की सराहना करती है। खूब आनदित रहें!

आपकी.....निधि

कुमारी निधि
प्राथमिक विद्यालय बिरनाबाड़ी
किशनगंज
प्रधान शिक्षिका(BPSC)
राजकीय शिक्षक सम्मान 2024
राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान 2025

विद्यालय गाथा

आदर्श प्राथमिक विद्यालय, केवला
अंचल-छातापुर, जिला-सुपौल

आदर्श प्राथमिक विद्यालय, जिला-सुपौल

वर्ष 1960 में स्थापित आदर्श प्राथमिक विद्यालय, केवला शिक्षा, स्वच्छता और अनुशासन का अनुपम केंद्र है। यह विद्यालय न केवल पढ़ाई के क्षेत्र में अग्रणी है, बल्कि अपने स्वच्छ वातावरण और उत्कृष्ट व्यवस्था के कारण भी पूरे क्षेत्र में उदाहरण बन चुका है।विद्यालय में प्रवेश करते ही हरे-भरे लहलहाते पौधे, बच्चों की चहकती आवाज़ें और स्वच्छ परिसर मन को आनंदित कर देते हैं।

विद्यालय को मिल चुके हैं कई उपलब्धियाँ और सम्मान

विद्यालय में प्रधान शिक्षक सहित सात समर्पित शिक्षक कार्यरत हैं, जो बच्चों के बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।प्रधान शिक्षक मोहम्मद रूहुल्लाह के नेतृत्व में यह शिक्षक दल शिक्षा के साथ-साथ समाज में जागरूकता लाने का भी कार्य कर रहा है।शिक्षक दल ने स्वच्छता, पोषण, बाल संरक्षण, पर्यावरण और बालिका शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अनेक जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

विद्यालय का वातावरण पूर्णतः शिक्षण, अनुशासन और सृजनशीलता से परिपूर्ण है। बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु उत्कृष्ट सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

आदर्श प्राथमिक विद्यालय, केवला ने शिक्षा और नवाचार दोनों क्षेत्र में उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विद्यालय को स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार एवं नवाचारी विद्यालय सम्मान से सम्मानित किया गया है।विद्यालय के शिक्षक नरेश कुमार निराला को शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए पूर्व अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ ने "बेस्ट टीचर ऑफ द मंथ अवार्ड" से सम्मानित किए। वहीं जिला पदाधिकारी सुपौल ने श्री निराला को दो बार शिक्षक दिवस के मौके पर "नवाचारी शिक्षक सम्मान" से सम्मानित किए हैं। श्री निराला साहित्य के क्षेत्र में भी काफी रूचि रखते हैं।उन्होंने अभी तक दो दर्जनों से अधिक कविताएं लिखीं हैं।
जिसके कारण विभिन्न संस्थाओं के द्वारा उन्हें "भीम रत्न साहित्य सम्मान" जैसे दर्जनों प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

विद्यालय गाथा

उपलब्धियां

सुसज्जित पुस्तकालय जिसमें ज्ञानवर्धक और मनोरंजक पुस्तकें रखी गई हैं।

👉 7 शौचालय, 2 स्नानागार, 15 मूत्रालय स्वच्छता और स्वास्थ्य की दृष्टि से आदर्श व्यवस्था।

👉36 नलों से युक्त पेयजल सुविधा, जिससे सभी बच्चों को स्वच्छ जल सुलभ है।

👉तीन रसोईया विद्यालय के स्वच्छ रसोईघर में पौष्टिक मध्यान्ह भोजन तैयार करती हैं।

👉एक कर्मठ सफाईकर्मी परिसर को सदैव स्वच्छ और सुन्दर बनाए रखते हैं।

👉आकर्षक चहारदीवार एवं रोशनी की उत्तम व्यवस्था से विद्यालय सुरक्षित और सुसज्जित बना है।

आदर्श प्राथमिक विद्यालय, केवला आज शिक्षा, स्वच्छता और नवाचार का ऐसा प्रतीक बन चुका है, जिस पर पूरा क्षेत्र गर्व करता है।

नरेश कुमार निराला
विशिष्ट शिक्षक
आदर्श प्राथमिक विद्यालय केवला
अंचल–छातापुर, जिला–सुपौल

सुदूर ग्रामीण क्षेत्र रहने के वाबजूद पिछले तीन वर्षों में छह बच्चे नवोदय प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त किए हैं।

विद्यालय के विद्यार्थियों ने चित्रकला, कविता, निबंध लेखन, खेलकूद तथा सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में जिला और प्रखंड स्तर पर सफलता हासिल की है।विद्यालय में संचालित हरियाली अभियान, स्वच्छता सप्ताह, और बालिका शिक्षा अभियान को समाज में व्यापक सराहना मिली है।

विद्यालय की पहचान – शिक्षा से संस्कार तक

यह विद्यालय केवल शिक्षा देने का स्थान नहीं, बल्कि बच्चों में संस्कार, शिष्टाचार और सामाजिक चेतना का भी केंद्र है। यहाँ बच्चों को सच्चे अर्थों में सभ्य नागरिक बनने की प्रेरणा दी जाती है।विद्यालय की हर उपलब्धि के पीछे सातों शिक्षकों की मेहनत, लगन और सामूहिक भावना की झलक मिलती है।

विद्यालय गाथा

अवधेश कुमार
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, रसुआर

उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, रसुआर

उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, रसुआर, जो प्रखंड मरौना, जिला सुपौल (बिहार) में स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष 1962में एक प्राथमिक विद्यालय के रूप में हुई थी। समय के साथ यह निरंतर प्रगति करता गया – पहले मध्य विद्यालय, फिर 2015 में माध्यमिक स्तर तक उत्क्रमित हुआ, और अंततः 2023 में यह उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका है।

आज इस विद्यालय में कक्षा 1 से 12वीं तक की पढ़ाई अत्यंत सुव्यवस्थित और आकर्षक ढंग से संचालित होती है। यद्यपि यह विद्यालय बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में स्थित है, फिर भी यह अपने पंचायत क्षेत्र में निरंतर शैक्षणिक और सामाजिक प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यहां के छात्र हर वर्ष पॉलीटेक्निक, आई.टी.आई., तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाते हैं।

विद्यालय चारों ओर हरियाली से घिरे खेतों के बीच स्थित है। इसके रास्ते और भूमि का अधिग्रहण ग्रामीणों के सहयोग से किया गया था, जो सामुदायिक एकता का सुंदर उदाहरण है। विद्यालय परिसर में कार्यालय, शिक्षक प्रकोष्ठ, विज्ञान प्रयोगशाला, आनंदमयी कक्ष, कंप्यूटर लैब, तथा उन्नयन कक्षा(डिजिटल और सिमुलेशन लैब) जैसी व्यवस्थाएँ सुचारू रूप से संचालित हैं, जिससे विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार सीखने और प्रयोग करने का अवसर मिलता है।

विद्यालय का विशाल खेल मैदान बच्चों की खेल प्रतिभा को निखारने में सहायक है। खेल-कूद की सभी आवश्यक सामग्रियाँ उपलब्ध हैं, जिससे छात्र-छात्राएँ विभिन्न खेलों में सक्रिय भाग लेकर शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं। हमारा विद्यालय हरे-भरे पेड़ों और रंग-बिरंगे फूलों से सजा हुआ है, जिनकी सुगंध पूरे वातावरण को ताजगी से भर देती है। जल और स्वच्छ शौचालयों की पर्याप्त व्यवस्था है, जिससे स्वच्छता वातावरण बना रहता है।

वर्ष 2022 में विद्यालय को बिहार शिक्षा परियोजना के अंतर्गत विभिन्न श्रेणियों में ओवरऑल उत्कृष्टता प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ, जो इसकी निरंतर प्रगति और समर्पण का प्रमाण है।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री राज कुमार के नेतृत्व में नियमित रूप से योग, ध्यान, और खेलकूद कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिससे विद्यार्थियों में अनुशासन, एकाग्रता और जीवन कौशल का विकास होता है।

सचमुच, उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, रसुआर न केवल शिक्षा का केंद्र है, बल्कि यह हमारे क्षेत्र की गौरवगाथा का प्रतीक भी है।

विद्यालय गाथा

नेहा कुमारी
रा. स. हरावत राज उच्च माध्यमिक विद्यालय,
गणपतगंज, सुपौल

विद्यालय रा. स. हरावत राज
उच्च माध्यमिक विद्यालय, गणपतगंज जो कि प्रखण–राघोपुर, जिला – सुपौल में अवस्थित है। इसकी स्थापना 1939 में हुई थी, जिससे यह पता चलता है कि यह विद्यालय हमारे जिला का द्वितीय सबसे पुराना विद्यालय है जो कि आजादी से पहले का है। इस विद्यालय में 9–12 तक की कक्षाएं बहुत सुसज्जित तरीके से चलती हैं। सभी विषय के शिक्षक भी हैं। विद्यालय में मनमोहक कार्यालय के साथ ही शिक्षक प्रकोष्ठ, पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशाला संगीत कक्ष, कला भवन, कंप्यूटर लैब,विज्ञान पार्क भी मौजूद हैं, जिससे बच्चे अपनी रुचि के अनुसार कार्य कर पाते हैं। विद्यालय में बड़ा मैदान है और खेल कूद की सारी सामग्री भी उपलब्ध है जिससे बच्चे अपनी रुचि अनुसार खेल में भाग लेते है। हरा भरा हमारा विद्यालय देखने में भी काफ़ी आकर्षक है क्योंकि चारों तरफ़ अनेकों प्रकार के पेड़ पौधों से विद्यालय को सजाया गया है। फूलों की खुशबू से महकता हमारा वातावरण है जो ताज़गी का एहसास करवाता हैं। जल और शौचालय की पूरी व्यवस्था है।

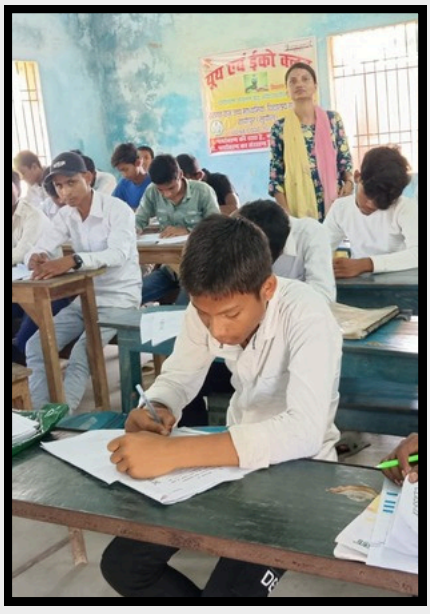

शिक्षक गाथा

केशव कुमार
मजफ्फरपुर

कला केवल कार्य की सुंदरता ही नहीं बल्कि आनंद का भी एक स्रोत है जो मानव मन को सरस बनाये रखती है। अपने कलात्मक शिक्षण से कक्षा को आनंददायी बना देनेवाले ऐसे ही एक शिक्षक हैं बैद्यनाथ रजक, जो बिहार के समस्तीपुर जिले के हसनपुर प्रखंड अंतर्गत प्राथमिक कन्या विद्यालय मालदह में 2006 से ही शिक्षा का अलख जगा रहे हैं ।खासकर उनके पढ़ाने का जो रोचक तरीका है वो बिल्कुल अनोखा है। वो अपनी कक्षा में खेल-खेल में और गीत विधि से बच्चों को पढ़ाते हैं। जिसके कारण वे न केवल बच्चों के बीच लोकप्रिय और प्रभावी हैं, बल्कि शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भी प्रशंसा के पात्र बने रहते हैं।

बैद्यनाथ रजक प्राथमिक कन्या विद्यालय मालदह, समस्तीपुर

यदपि शिक्षक बैद्यनाथ रजक लंबे समय से शिक्षा के उत्थान हेतु एक कर्मवीर की भाँति सतत प्रयत्नशील रहे हैं और सफल भी हुए हैं लेकिन सोशल मीडिया या आमलोगों के बीच उनकी बेहतरीन शिक्षण शैली तब प्रकाश में आयी थी जब कोरोनाकाल के बाद वे अपने पोषक क्षेत्र में गीत गाकर बच्चों को विद्यालय चलने के लिए प्रेरित करते देखे गये थे। उनके इस प्रयास की खूब सराहना हुई थी। किसी भी विषय को अपनी विशिष्ट शैली से उसे रोचक बना देना ही बैद्यनाथ रजक की पहचान है। चाहे वो कक्षीय गतिविधि हो, नामांकन जागरूकता अभियान हो, विद्यालय चलो कार्यक्रम हो या फिर कोई अन्य सामाजिक जागरूकता हो, उनकी भूमिका सराहनीय होती है। वे एक कुशल शिक्षक के साथ-साथ एक सफल सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं जो नुक्कड़ नाटक की सहायता से बाल विवाह, नशापान और दहेजप्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों को लेकर मुखरता के साथ लोगों को जागरूक करते रहे हैं।

वर्ष 2022 में बच्चों को लू से बचाव हेतु उनका अनोखा प्रयास देश स्तर पर सुर्खियों में रहा और लोगों ने खूब सराहा। वे मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम के जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर के साथ-साथ अपने विद्यालय के फोकल शिक्षक भी हैं और सुरक्षित शनिवार के प्रत्येक कार्यक्रम को पूर्व तैयारी के साथ संपादित करते हैं, जिन गतिविधियों को सहज रूप से देखा जा सकता है। शिक्षक बैद्यनाथ रजक का साहित्य से भी गहरा लगाव है। जिसके कारण वे पाठ में आये किसी भी बिंदु पर कविता या गीत लिखकर कक्षा में प्रस्तुत करते रहते हैं। जिसका प्रसारण समय-समय पर राष्ट्रीय चैनलों के माध्यम से भी किया जाता रहता है।वे वास्तव में एक नवाचारी शिक्षक हैं। विद्यालय में कब और कौन सा नवाचार या बच्चों के बीच कौन सा व्यवहार परिवर्तन होना चाहिए, यह बात वो बखूबी जानते हैं और उसी के अनुरूप योजना बनाकर उसे कार्यरूप में परिणत करते हैं। जिसका प्रतिफल है कि जिले में उनका विद्यालय अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है तथा अन्य विद्यालय के शिक्षक भी उनसे सीख लेते हैं। बच्चों के प्रति लगाव एवं समर्पण भाव के कारण ही उन्हें प्रखंड, अनुमंडल, जिला एवं राज्य स्तर पर भी सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 2023 में अपनी उत्कृष्ट शिक्षण शैली के कारण ही वे बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री अर्लेकर महोदय के द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। साथ ही उसी वर्ष उन्हें बेहतर शिक्षण कौशल एवं प्राथमिक शिक्षा में किये गये नवाचारों के कारण शिक्षक दिवस पर राजकीय शिक्षक पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया जा चुका है। आजादी के दशकों बाद भी जहाँ कुछ लोग अभी भी सरकारी विद्यालय की व्यवस्था पर उँगली उठा रहे हैं, वहीं बैद्यनाथ रजक जैसे शिक्षक उन्हें एक सिरे से खारिज कर रहे हैं।

शिक्षक गाथा

अमरकांत ठाकुर
प्रभारी प्रधानाध्यापक
प्रोजेक्ट कन्या उच्च विद्यालय तुलसिया, दिघलबैंक, किशनगंज

आइये आज पढ़ते हैं एक साधारण विद्यालय से राज्य स्तरीय पहचान तक बनाने की एक शिक्षक मुकेश कुमार जी की शिक्षक गाथा

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है, और एक शिक्षक के रूप में मुकेश कुमार का सपना हमेशा यही रहा कि अपने छात्रों को बेहतर भविष्य की ओर ले जाने में एक सेतु बने । वर्ष 2014 में जब प्रोजेक्ट कन्या उच्च विद्यालय, तुलसिया, दिघलबैंक (किशनगंज) में कार्यभार संभाला, तब यह स्कूल संसाधनों की कमी, शिक्षण की गुणवत्ता और छात्राओं की उपस्थिति जैसी कई चुनौतियों से जूझ रहा था।

विद्यालय में न तो पर्याप्त शिक्षण सामग्री थी, न ही अन्य सुविधा। कई छात्राएँ पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती थीं, और अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी थी। लेकिन मुकेश कुमार ने इसे एक अवसर के रूप में देखा, न कि समस्या के रूप में।

धीरे-धीरे विद्यालय ने सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ना शुरू किया। शिक्षण परिणामों में निरंतर सुधार हुआ, छात्राओं ने जिला स्तर की परीक्षाओं में टॉप किया, और विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार भी जीते।

इन्होंने विद्यालय को बिहार राज्य के चुनिंदा उभरते विद्यालयों में गिना जाने लगा। विद्यालय में अब स्मार्ट क्लास, पुस्तकालय, कंप्यूटर लैब और स्वच्छता की उत्तम व्यवस्था है।

मुकेश कुमार केवल शिक्षण कार्य ही नहीं बल्कि विद्यालय की समस्त शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक, और प्रशासनिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई।

मुकेश कुमार
उत्क्रमित उच्च विद्यालय कोरिया, चांदन, बांका

इन्होंने सबसे पहले स्कूल के बुनियादी ढांचे को सुधारने की दिशा में कार्य शुरू किया। छोटे-छोटे कदमों के साथ, शिक्षकों को प्रोत्साहित किया कि वे रचनात्मक तरीकों से पढ़ाएं, टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करें और हर छात्रा की जरूरत को समझे।

इन्होंने समुदाय को जोड़ने की कोशिश की — स्कूल सिर्फ चारदीवारी नहीं, एक जिम्मेदारी है, यह संदेश लेकर इन्होंने गाँव में बैठकों का आयोजन किया, अभिभावकों को स्कूल में बुलाकर संवाद स्थापित किया, जिससे छात्राओं की उपस्थिति में तेजी से सुधार हुआ।

शिक्षक गाथा

विद्यालय में इनकी प्रमुख जिम्मेदारियाँ निम्नलिखित रही हैं:
नियमित शिक्षण कार्य के साथ छात्रों की उपस्थिति पर विशेष ध्यान।
सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेल-कूद प्रतियोगिताओं एवं अन्य गतिविधियों का आयोजन व संचालन।
प्रभारी प्रधानाध्यापक के रूप में कुशल नेतृत्व।
ईको क्लब के मास्टर ट्रेनर के रूप में पर्यावरणीय गतिविधियों को बढ़ावा देना।

एक शिक्षक के रूप में मुकेश कुमार की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है। मैं यह नहीं कहता कि यह अकेले का प्रयास था, बल्कि यह टीम वर्क, सामुदायिक सहभागिता और इनके निरंतर लगन का परिणाम है।
अब मुकेश कुमार +2 उत्क्रमित उच्च विद्यालय, कोरिया, चांदन, बांका में स्थानांतरित होकर कार्यभार ग्रहण किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वहां भी उसी जोश, लगन और उत्तरदायित्व के साथ कार्य करेंगे तथा विद्यालय को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपना योगदान देंगे ।
"जब इरादे नेक हों और प्रयास निरंतर, तो कोई भी विद्यालय साधारण नहीं रहता।"

मैं आशा करता हूँ कि इनकी यह यात्रा अन्य शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रेरणा देगी कि बदलाव संभव है – अगर यह ठान लें।

शिक्षक गाथा

नीतू शाही
प्रा0 विद्यालय प्रखंड कॉलोनी
फुलवारी शरीफ पटना

प्राथमिक विद्यालय वलीपुर हरिजन टोली, प्रखंड पालीगंज, जिला पटना की कहानी एक प्रेरणादायक उदाहरण है कि कैसे एक समर्पित और नवाचारी प्रधान शिक्षिका विद्यालय को सुधार सकती है और बच्चों के भविष्य को आकार दे सकती है।

अपराजिता कुमारी ने प्रधान शिक्षिका के रूप में योगदान किया और विद्यालय की दयनीय स्थिति को देखकर उन्होंने बदलाव लाने का निर्णय लिया।

विद्यालय में एक भी बच्चा स्कूल ड्रेस में नहीं आता था, न कोई रूटीन था, न ही टाइम टेबल, और घंटी भी चोरी हो गई थी। अपराजिता कुमारी ने इन चुनौतियों का सामना करने का निर्णय लिया और विद्यालय को सुधारने के लिए काम करना शुरू किया। उन्होंने सर्वप्रथम विद्यालय में साधारण सी सबसे जरूरी चीजें जैसे घड़ी, घंटी, ब्लैकबोर्ड आदि आधारभूत आवश्यक सामग्री मंगवाई।

विद्यालय के गणवेश में बच्चों को आने के लिए उन्होंने नवाचार का प्रयोग किया। एक बच्ची ने जब अपने पुराने थोड़े से फटे स्कूल ड्रेस को पहनकर आई तो उस बच्ची की तस्वीर मोबाइल से खींचकर प्रिंट करवा कर दीवार पर उसके नाम के साथ लगाई। ऐसा देखकर अपनी तस्वीर और नाम दीवार पर देखने की ललक में और बच्चे एक-एक कर स्कूल ड्रेस खरीदने लगे। जो भी बच्चे स्कूल ड्रेस में आते उनकी तस्वीर उनके नाम के साथ दीवार पर लगा रहीं थीं और ड्रेस में आने वाले बच्चों की संख्या बढ़ रही थी।

अति पिछड़े समाज के बच्चों को एक नई दिशा मिल गई। अपराजिता कुमारी ने सुरक्षित शनिवार, पोषण पखवाड़ा, हाथ धुलाई, स्वच्छता अभियान जैसे आयोजन विद्यालय में प्रति दिन नई-नई गतिविधियां एवं खेल के साथ अनेक आयोजन करवाए। खाने, पीने, बैठने, उठने, बोलने तक में भी सुधार किया जा रहा है। बच्चे अब सक्रिय रूप से सभी गतिविधियों में भाग ले रहे हैं। जहां मात्र 10 से 15 बच्चे सिर्फ खाना खाने आते थे, वहां अब 35 से 40 बच्चे विद्यालय आ रहे हैं। उपस्थिति बढ़ रही है।

अपराजिता कुमारी पूर्व में गोपालगंज के रा उ म वि जिगना जगरनाथ प्रखंड हथुआ में कार्यरत थीं।

अपराजिता कुमारी पूर्व में गोपालगंज के रा उ म वि जिगना जगरनाथ प्रखंड हथुआ में कार्यरत थीं।
वहां भी उन्होंने 10 साल में सैकड़ों नवाचार किए। वे विद्यालय आपदा प्रबंधन कार्यक्रम की राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर भी हैं। कोरोना काल में इन्हें दूरदर्शन पर देखा होगा, सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम का संचालन करते हुए। पूरे बिहार में जहां भी 'सुरक्षित शनिवार' का कार्यक्रम चलता है, वहां के बच्चे और शिक्षक इन्हें जानते हैं।

आजकल आप इन्हें PME-VIDYA चैनल बिहार पर वर्ग 1 से 8 तक के हिंदी विषय की पाठ्य पुस्तक और वर्ग 1 से 5 तक पर्यावरण विषय ऑन स्क्रीन पढ़ाते हुए देख सकते हैं। ये कविताएं भी लिखती हैं। इनकी कविता में आपदा का विषय हो या समसामयिक विषय, इनकी कविताएं बच्चों के लिए बहुत उपयोगी हैं। इनके पढ़ाने की शैली रोचक एवं आनंददायक होने के कारण बच्चों के बीच खासी लोकप्रिय हैं।

शिक्षिका अपराजिता ने बाल विवाह, बालिका शिक्षा, स्वच्छता, और पर्यावरण अभियान जैसे मुद्दों पर काम किया है, जिससे समुदाय को जागरूक किया जा सके और उन्हें इन मुद्दों पर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

शिक्षक गाथा

शिक्षिका द्वारा विद्यालय के प्रबंधन एवं प्रशासन में कई महत्वपूर्ण सुधार किए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख सुधार :

अपराजिता जी ने विद्यालय को "जन आंदोलन" का रूप देने वाली पहल की है, जैसे कि समुदाय को विद्यालय के कामकाज में शामिल करना, उन्हें विद्यालय के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना, और विद्यालय को समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाने के लिए काम करने की पहल कर रही है ।

1. विद्यालय के कक्ष का सौंदर्याकरण: तत्काल विद्यालय कक्ष को विभिन्न प्रकार के हिंदी, अंग्रेजी अक्षर चार्ट, फलों, सब्जियों, पालतू जानवरों, जंगली जानवरों, महापुरुषों, पर्यटन स्थलों, पेड़ पौधों के अंग शरीर के अंग गुड टच बैड टच आदि अनेकों जानकारीप्रद चार्ट को चारों तरफ दीवार पर लगा कर इसके माध्यम से सौंदर्याकरण किया गया है।
2. स्वच्छता: विद्यालय में स्वच्छता की व्यवस्था को मजबूत किया गया है, जिसमें जल-शौचालय, बिजली आदि को लगवाया गया है। साबुन से हाथ धोने की आदत को प्रोत्साहित किया गया।
3. बच्चों की उपस्थिति, नामांकन, ड्रेस और अनुशासन में सुधार: जब से बच्चे ड्रेस में आने लगे हैं, तो बच्चों की उपस्थिति बढ़ती जा रही है। नामांकन, ड्रेस और अनुशासन में सुधार के लिए सभी अभिभावकों से लगातार संपर्क कर रही हैं।
4. दस्तावेज़ और अभिलेखों के सुव्यवस्थित रख-रखाव की पहल: विद्यालय में दस्तावेज़ और अभिलेखों के सुव्यवस्थित रख-रखाव के लिए एक छोटा अलमारी खरीदा गया है, जिससे विद्यालय के रिकॉर्ड को आसानी से प्रबंधित किया जा सके।
5. संसाधन जुटाने और स्थानीय सहयोग की सक्रियता: संसाधनों को जुटाने में स्थानीय सहयोग की सक्रियता बढ़ी, जिससे विद्यालय को आवश्यक संसाधन प्राप्त हो सकें।
6. विद्यालय के शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार: विद्यालय के शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार के लिए कई कदम उठाए हैं, जिसमें शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने, पाठ्यक्रम को अद्यतन करने, और छात्रों के लिए दिवस ज्ञान के अनुरूप अतिरिक्त गतिविधियों का आयोजन करना शामिल है।
7. विद्यालय के बुनियादी ढांचे में सुधार: विद्यालय के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए कई कदम उठाए हैं, जिसमें विद्यालय भवन का नवीनीकरण के लिए विभाग को लिखित आवेदन दिया गया है।
8. शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के लिए प्रति दिन शिक्षकों के साथ बैठक आयोजन कर अगले दिन की रूपरेखा बनाती हैं, जिससे वे अपने शिक्षण कौशल में सुधार कर सकें।
9. छात्रों के लिए अतिरिक्त गतिविधियों का आयोजन: यह किया जा है, जैसे कि खेल, संगीत, और कला आदि, जिससे वे अपने ज्ञान और कौशल में सुधार कर सकें।
10. विद्यालय के अभिभावकों के साथ संवाद: उन्होंने विद्यालय के पोषक क्षेत्र के अभिभावकों के साथ संवाद बढ़ाया है, जिससे वे अपने बच्चों की प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें और किसी भी समस्या को बिना किसी झिझक के बता सकें।

- *बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना*: इन्होने बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए काम किया है, जैसे कि बालिकाओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना और उन्हें शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करना।

- *स्वच्छता अभियान*: शिक्षक अभिभावक संगोष्ठी के माध्यम से स्वच्छता अभियान चलाया है, जिससे समुदाय को जागरूक किया जा सके और उन्हें स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया जा सके।

- *पर्यावरण अभियान*: इन्होने अभियान चलाया है, जिससे समुदाय को जागरूक किया जा सके और उन्हें पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में बताया जा सके।

विगत तीन माह के अंदर प्रधान शिक्षिका अपराजिता कुमारी के प्रयासों से विद्यालय में एक सकारात्मक परिवर्तन आया है जो यह दर्शाता है कि एक समर्पित और नवाचारी प्रधान शिक्षक कैसे विद्यालय को सुधार सकता है और बच्चों के भविष्य को आकार दे सकता है।

नीतू शाही
प्रा0 विद्यालय प्रखंड कॉलोनी
फुलवारी शरीफ पटना

छात्र गाथा

छात्र प्रभास कुमार है। राधे मंडल एवं कंचन देवी के पुत्र प्रभाष कुमार की कहानी सुनिए उनके ही शिक्षक की जुबानी।

बिशनपुर का निवासी प्रभाष मेरे विद्यालय का एक होनहार छात्र है। उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय विशनपुर जीछो, प्रखंड गोराडीह जिला भागलपुर में नवम वर्ग का छात्र है प्रभाष।

इनकी शिक्षिका बताती हैं, मेरा ध्येय विद्यालय के सभी छात्रों के सर्वांगीण विकास पर रहता है, जिसके तहत मै उन्हें प्रतिदिन चेतना सत्र में सुविचार प्रस्तुत कर प्रोत्साहित करती हूं। जब भी मुझे छात्रों को लेकर किसी प्रतियोगिता में जाने का अवसर मिलता है, मैं हर्षोल्लासित होकर उन्हें गंतव्य स्थान तक ले जाती हूं ।।

इसी संदर्भ में मैं प्रभाष को साथ लेकर प्रखंड तथा जिला स्तर तक गई हूं एवं हमेशा मार्गदर्शनकरती हूं।

आज जब प्रभाष ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता अंडर १६ में १०० मीटर दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया तो हम सभी गौरवान्वित महसूस किए।

प्रभाष मध्यवर्गीय परिवार से है इस उपलब्धि से उनके माता-पिता एवं परिवारजन में काफी उत्साह है ।मैंने उन्हें बताया कि मेडल लाओ ,नौकरी पाओ ।और उसने उसे कर दिखाया।

विद्यालय में प्रधानाध्यापक सहित सभी शिक्षकों ने मिलकर उसे सम्मानित किया तथा उसके उज्जवल भविष्य की कामना की ।यह मेरे लिए एवं मेरे विद्यालय, जिला एवं राज्य के लिए गौरव की बात है ।खेल प्रतियोगिता एवं अन्य प्रतियोगिता में मेरे साथ छात्र एवं छात्राओं की कुछ तस्वीर प्रस्तुत है।

सुबाला कुमारी।
हिन्दी शिक्षिका, भागलपुर बिहार।

डिजिटल दुनियां

इं. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

ChatGPT

ChatGpt

ChatGPT एक आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित चैटबॉट है जिसे OpenAI द्वारा विकसित किया गया है। यह मानवीय भाषा को समझकर उसी तरह उत्तर देता है और विभिन्न कामों में मदद करता है, जैसे- प्रश्नों के उत्तर देना, कंटेंट लिखना, अनुवाद करना, कोडिंग में सहायता देना, आदि। इसे शिक्षक, विद्यार्थी, लेखक, प्रोग्रामर और आम लोग आसानी से उपयोग कर सकते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ प्राकृतिक भाषा में बातचीत करने की सुविधा (जैसे हम किसी व्यक्ति से बात करते हैं)।

✅ सवालों के उत्तर, नोट्स, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट या आर्टिकल लिखने में मददगार।

✅ कविता, कहानी, ईमेल, भाषण या प्रेज़ेंटेशन तैयार करने की क्षमता।

✅ गणित, विज्ञान, इतिहास, भाषा, प्रोग्रामिंग आदि विषयों में मदद।

✅ कोडिंग में समस्या समाधान और कोड लिखने/समझाने की सुविधा।

✅ 24×7 उपलब्ध — मोबाइल, कंप्यूटर या टैबलेट पर।

✅ बिना इंस्टॉलेशन — सीधे वेबसाइट या ऐप से उपयोग।

ChatGpt का उपयोग कैसे करें?

1. वेबसाइट पर जाएँ –
🌐 https://chat.openai.com
2. लॉगिन या साइनअप करें –
🔹 अपनी ईमेल, गूगल या माइक्रोसॉफ्ट अकाउंट से लॉगिन कर सकते हैं।
🔹 यदि नया उपयोगकर्ता हैं तो "Sign Up" पर क्लिक करके अकाउंट बनाएँ।
3. चैट शुरू करें –
💬 चैट बॉक्स में अपना प्रश्न या कमांड टाइप करें।
✔ उदाहरण:
- "भारत का सविधान कब लागू हुआ?"
- "कक्षा 8 के लिए विज्ञान के नोट्स लिखो।"
- "HTML में वेबसाइट का बेसिक कोड लिखो।"
- "Write an email for leave application."

4. उत्तर प्राप्त करें –
✨ कुछ ही सेकंड में AI द्वारा उत्तर प्रदर्शित हो जाएगा।
✨ आप उत्तर को कॉपी, एडिट या PDF में सेव कर सकते हैं।

ChatGpt ऐप डाउनलोड कैसे करें?

GooglePlay

Apple App Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://chat.openai.com/

डिजिटल दुनियां

इं. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

Gemini

Google Gemini

Google Gemini एक शक्तिशाली आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) चैटबॉट है जिसे Google द्वारा विकसित किया गया है। यह मल्टीमॉडल AI मॉडल है जो टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो, वीडियो और कोड सभी को समझ सकता है। यह यूज़र्स को सवालों के जवाब, कंटेंट क्रिएशन, कोडिंग, प्रेज़ेंटेशन, अनुवाद और रीयल-टाइम इंटरनेट आधारित जानकारी देने की क्षमता रखता है।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ मल्टीमॉडल AI – टेक्स्ट, इमेज, आवाज़ और वीडियो को समझकर उत्तर देता है।

✅ रियल-टाइम इंटरनेट सर्च की सुविधा (Google Search से जुड़ा)।

✅ प्रेज़ेंटेशन, ईमेल, असाइनमेंट, ब्लॉग, रिज़्यूमे आदि बनाने में मदद।

✅ कोडिंग सपोर्ट – विभिन्न प्रोग्रामिंग भाषाओं में कोड लिखना, सुधारना और समझाना।

✅ इमेज एनालिसिस – तस्वीर अपलोड करके उससे संबंधित सवाल पूछ सकते हैं।

✅ मोबाइल, कंप्यूटर या टैबलेट पर आसानी से उपयोग।

✅ Google Drive, Docs, Slides, Gmail, YouTube आदि के साथ बेहतर इंटीग्रेशन।

Google Gemini का उपयोग कैसे करें?

1. वेबसाइट पर जाएँ –
🌐 https://gemini.google.com
2. लॉगिन करें –
🔹 अपने Google Account (Gmail ID) से लॉगिन करें।
🔹 पहली बार उपयोग कर रहे हों तो "I agree / Continue" पर क्लिक करें।
3. चैट शुरू करें –
💬 चैट बॉक्स में अपना प्रश्न या टास्क लिखें।
✔ उदाहरण:
- "Write a paragraph on Digital India in Hindi."
- "सूर्य ग्रहण कैसे लगता है?"
- "Generate HTML code for a login form."
- "Explain this image and identify the objects."

4. उत्तर प्राप्त करें –
✨ AI द्वारा जनरेट किया हुआ उत्तर तुरंत दिखाई देगा।
✨ चाहें तो आप "Modify", "Regenerate" या "Google Search" से और विस्तार ले सकते हैं।

Google Gemini ऐप डाउनलोड कैसे करें?

GooglePlay

Apple App Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://gemini.google.com/

डिजिटल दुनियां

इं. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

perplexity

Perplexity AI

Perplexity AI एक उन्नत आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस आधारित सर्च और चैटबॉट टूल है जो रियल-टाइम इंटरनेट डेटा + AI की मदद से तेज, सही और स्रोतों सहित उत्तर देता है। यह केवल चैटबॉट नहीं, बल्कि एक AI सर्च इंजन है जो जानकारी देने के साथ उसके स्रोत (Websites, Research Papers, News आदि) भी दिखाता है।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ रियल-टाइम इंटरनेट सर्च + AI उत्तर देने की क्षमता।

✅ हर उत्तर के साथ स्रोत (Source links) दिखाता है — विश्वसनीय जानकारी के लिए।

✅ प्रश्न, निबंध, रिपोर्ट, शोध, सारांश (Summary) और विश्लेषण तैयार करने में सक्षम।

✅ तस्वीरों व दस्तावेज़ों पर आधारित सवालों का जवाब देने की सुविधा।

✅ Students, Teachers, Researchers, Bloggers और Developers सभी के लिए उपयोगी।

✅ मोबाइल, टैबलेट या कंप्यूटर — हर डिवाइस पर उपलब्ध।

✅ Google, Wikipedia, Research Papers, News portals आदि से जुड़कर जानकारी देता है।

Perplexity AI का उपयोग कैसे करें?

1. वेबसाइट पर जाएँ –
🌐 https://www.perplexity.ai
2. लॉगिन करें (वैकल्पिक लेकिन बेहतर अनुभव के लिए सुझावित)
🔹 आप Google, Apple या Email ID से लॉगिन कर सकते हैं।
🔹 बिना लॉगिन के भी सवाल पूछ सकते हैं।
3. सवाल पूछना शुरू करें –
💬 सर्च बॉक्स में अपना प्रश्न टाइप करें।
✔ उदाहरण:
- "भारत का पहला सैटेलाइट कौन सा था?"
- "Explain photosynthesis in simple language."
- "Summarize the Russia-Ukraine war latest update."
- "HTML + CSS से Login Page का कोड लिखो।"

4. उत्तर प्राप्त करें –
✨ AI आपको उत्तर देता है और साथ ही स्रोत लिंक भी दिखाता है।
✨ आप स्रोतों पर क्लिक करके जानकारी को सत्यापित कर सकते हैं।

Perplexity AI ऐप डाउनलोड कैसे करें?

GooglePlay

Apple App Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://www.perplexity.ai

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

अंजू कुमारी, मध्य विद्यालय
गंगवारा रुन्नीसैदपुर सीतामढ़ी

भारत के शिक्षा क्षेत्र में एक ऐतिहासिक परिवर्तन

अंजू कुमारी, मध्य विद्यालय
गंगवारा रुन्नीसैदपुर सीतामढ़ी

भारत की शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार की दिशा में नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 एक ऐतिहासिक कदम है। इसे 29 जुलाई 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा मंजूरी दी गई थी। यह नीति देश में 34 वर्षों बाद लाई गई है, जिसने 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति की जगह ली। इसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, बहुआयामी और कौशल-आधारित बनाना है, ताकि 21वीं सदी की जरूरतों के अनुसार विद्यार्थी तैयार किए जा सकें।

1. प्रारंभिक शिक्षा में बड़ा बदलाव (5+3+3+4 संरचना)

नई शिक्षा नीति में पारंपरिक 10+2 प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 संरचना लागू की गई है।

पहले 5 वर्ष – बुनियादी स्तर (प्रारंभिक बाल शिक्षा से कक्षा 2 तक)

अगले 3 वर्ष – तैयारी स्तर (कक्षा 3 से 5 तक)

अगले 3 वर्ष – मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8 तक)

अंतिम 4 वर्ष – माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12 तक)

इस संरचना का मुख्य उद्देश्य बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को उनकी आयु और मानसिक विकास के अनुरूप बनाना है।

2. मातृभाषा में शिक्षा पर बल

NEP 2020 के अनुसार, कक्षा 5 तक (और जहाँ संभव हो कक्षा 8 तक) शिक्षण की भाषा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में होगी। इससे बच्चों में समझने और सीखने की क्षमता बढ़ेगी तथा भारतीय भाषाओं का संरक्षण भी होगा।

3. कौशल और व्यावसायिक शिक्षा

नई नीति में केवल किताबों पर आधारित शिक्षा नहीं, बल्कि कौशल-आधारित शिक्षा को भी महत्व दिया गया है। कक्षा 6 से ही विद्यार्थियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण (vocational education) जैसे– बढ़ईगिरी, हस्तकला, इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि आदि सिखाए जाएंगे ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

4. उच्च शिक्षा में सुधार

उच्च शिक्षा में मल्टी-डिसिप्लिनरी एप्रोच अपनाई गई है, जिससे विद्यार्थी किसी भी विषय का संयोजन चुन सकते हैं।

स्नातक पाठ्यक्रम अब 3 या 4 वर्ष का हो सकता है।

विद्यार्थी बीच में पढ़ाई छोड़ने पर सर्टिफिकेट, डिप्लोमा या डिग्री ले सकते हैं।

देश में उच्च शिक्षा के लिए राष्ट्रीय उच्च शिक्षा आयोग (HECI) का गठन किया जाएगा।

5. शिक्षकों की भूमिका और प्रशिक्षण

नीति के अनुसार शिक्षक अब केवल पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरक होंगे। उनके प्रशिक्षण, मूल्यांकन और पेशेवर विकास के लिए नए मानक तय किए गए हैं। बी.एड. कोर्स को 4 वर्ष का बनाया गया है ताकि शिक्षक अधिक प्रशिक्षित और सक्षम बनें।

6. डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा

कोविड-19 के अनुभव को ध्यान में रखते हुए NEP 2020 में डिजिटल शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। इसके लिए नेशनल एजुकेशनल टेक्नोलॉजी फोरम (NETF) का गठन किया गया है, जो शिक्षा में तकनीक के प्रयोग को प्रोत्साहित करेगा।

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को ज्ञान, कौशल, नवाचार और नैतिक मूल्यों से समृद्ध करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह नीति विद्यार्थियों को केवल नौकरी पाने के योग्य नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला, सोचने की स्वतंत्रता और रचनात्मकता से भरपूर बनाती है। यदि इसका सफल क्रियान्वयन हुआ तो भारत निश्चित रूप से "विश्व गुरु" बनने की दिशा में अग्रसर होगा।

नवाचार

खेल-खेल में सम विषम संख्याओं को सिखाना।

समस्या - वर्ग कक्ष में बच्चों को सम-विषम संख्या समझने में कठिनाई हो रही थी।

***गतिविधि* -**
कक्षा के सभी छात्रों को एक दिन पूर्व ही इस गतिविधि के बारे में बता दिया जाता है। छात्र, कंचे, कंकड़ या दाने लेकर अगले दिन विद्यालय आते हैं।

इसमें दो-दो बच्चों का समूह बनाकर उन्हें कुछ कंचे दिए जाते हैं । उन्हें आपस में काग-दोष (स्थानीय नाम) खेलने के लिए कहा जाता है। बच्चे मजे से इस खेल को खेलते हैं।

काग का मतलब- विषम संख्या (1,3,5...)
दोष का मतलब- सम संख्या (2,4,6...)
एक बच्चे अपनी मुट्ठी में कुछ कंचे लेकर दूसरे बच्चे से पूछते हैं काग या दोष ? तो बच्चे जवाब में- काग बोलते हैं, फिर बच्चे मुट्ठी खोल कर दिखाते हैं, अगर काग (विषम) 1,3,5,.. हुआ तो वे बच्चे उतने कंचे जीते।

अगर दोष (सम) 2,4,6,... हुआ तो उतने कांच हारे।

बच्चे जब भी पूछेंगे काग या दोष तो जवाब में कभी काग तो कभी दोष बोलेंगे। यह प्रक्रिया आगे भी चलते रहेगी।

इस प्रकार से बच्चों में सम संख्या एवं विषम संख्या की अवधारणा को विकसित किया जा सकता है।

सामग्री* - कंकर/ कंचे/ दाना आदि।
नवाचार के लाभार्थी -
यह गतिविधि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की उन कक्षाओं के लिए लाभदायक है जिनके पाठ्यक्रम में सम-विषम संख्या का अध्याय है ।

छात्रों की भागीदारी में सक्रियता, रटने की प्रवृत्ति में कमी।

नवाचार का सार -
इस नवाचार के माध्यम से बच्चे रोचक तरीके से सम विषम संख्या की अवधारणा को सिखते हैं, उन्हें बोझिल महसूस नहीं होता है।

कक्षा में स्वयं सीखने का वातावरण।

- राम बाबू राम
(प्रधान शिक्षक) नव. प्रा.वि. सदाटोल ईमादपुर गढ़पुरा, बेगूसराय

नवाचार

प्राथमिक विद्यालय हासिमपुर बालक में नई पहल, छात्रों में बढ़ा उत्साह

टीचर ऑफ द मंथ सम्मानित शिक्षिका वंदना ने शुरू की “स्टूडेंट ऑफ द मंथ” एवं " **स्टूडेंट ऑफ द वीक** "पहल

कटिहार जिले के बरारी प्रखण्ड अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय हासिमपुर बालक की शिक्षिका वंदना को शिक्षा विभाग द्वारा "टीचर ऑफ द मंथ" के प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है। इस उपलब्धि से प्रेरित होकर उन्होंने विद्यालय में छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए एक नई पहल शुरू की है।

टीचर ऑफ द मंथ के तर्ज पर उन्होंने “स्टूडेंट ऑफ द वीक” और “स्टूडेंट ऑफ द मंथ” प्रशस्ति पत्र तैयार किए हैं, जिन्हें वे स्वयं छात्रों को प्रदान करती हैं। इस पहल का उद्देश्य बच्चों में शिक्षा के प्रति लगाव और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना है।विद्यालय में इस पहल के बाद बच्चों में उत्साह और आत्मविश्वास में स्पष्ट वृद्धि देखी जा रही है। छात्र अब और अधिक मन लगाकर पढ़ाई में हिस्सा लेने लगे हैं। साथ ही, प्रशस्ति पत्र प्राप्त करने पर बच्चों के चेहरे पर मुस्कान और आत्म-संतोष झलकता है। यह प्रेरणादायी पहल शिक्षकों द्वारा लगातार सराहा जा रहा है एवं अन्य विद्यालयों के लिए एक उदाहरण है।

नवाचार

भागलपुर प्रमंडल स्तर पर संन्होला प्रखंड भागलपुर के बच्चों ने किया कमाल

पीएम श्री बारी आदर्श इंटरस्तरीय विद्यालय संन्होला, भागलपुर

पीएमश्रीबारीआदर्शउच्चविद्यालय संन्होला प्रखंड के बच्चों ने कबड्डी प्रतियोगिता में प्रमंडल स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त का प्रमंडल में विद्यालय को गौरव का क्षण दिया।
इस अवसर पर सभी खिलाड़ियों को विद्यालय परिवार के द्वारा मिलकर सम्मानित किया गया।

रंगोली प्रतियोगिता, बच्चों के कौशल एवं दिवाली के पटाखों एवं प्रदूषण से उत्पन्न स्वास्थ्य संबंधी जोखिम एवं बचाव के संदर्भ में जानकारी।

दिवाली औऱ महापर्व विधानसभा चुनाव 2025 का आगाज हो चुका है इस उपलक्ष्य पर विद्यालय के बच्चों ने बहुत ही आकर्षक रंगोली बनाई गई। बच्चों ने इतनी अच्छी रंगोली बनाई कि देखने वाले देखते रह गएं। बच्चों के द्वारा बनाई गई शानदार कलाकृति ने जहाँ दर्शकों का मन मोहा वहीं प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अभिभावक भी काफी खुश दिखें। इन बच्चों को प्रज्ञनिका की टीम की ओर से भी बहुत बधाई।

नवाचार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय भटवालिया में छठ पूजा की झांकी

उत्क्रमित मध्य विद्यालय भटवालिया की प्रतिभाशाली छात्राओं ने लोक आस्था के महान पर्व छठ पूजा पर एक मनमोहक झांकी प्रदर्शन प्रस्तुत किया।
झांकी में सूर्य देव की आराधना, छठी मैया की पूजा, और अर्घ्य अर्पण के पावन दृश्यों को बड़ी श्रद्धा और सृजनशीलता के साथ जीवंत किया गया।
पारंपरिक गीतों की मधुर ध्वनि, रंगीन परिधान, और सजे हुए कलात्मक मंच ने पूरे वातावरण को भक्ति और उल्लास से भर दिया।

विद्यालय परिवार और ग्रामीण जनों ने छात्राओं की रचनात्मकता व मेहनत की जमकर सराहना की।
इस आयोजन ने साबित किया कि हमारी बेटियाँ न केवल शिक्षा में अग्रणी हैं, बल्कि संस्कृति और परंपरा की सच्ची वाहक भी हैं।

भटवालिया
उत्क्रमित मध्य विद्यालय

नवाचार

दरभंगा जिला के आशीष अम्बर जी ने मतदाता जागरूकता अभियान चलाया

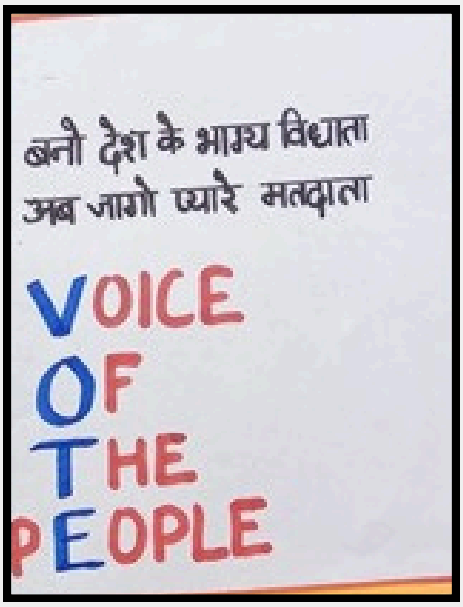

मैं आशीष अम्बर , (विशिष्ट शिक्षक) उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी , प्रखंड - केवटी , जिला - दरभंगा में कार्यरत हूं। आगामी माह में बिहार विधानसभा आम चुनाव आयोजित होने जा रहा है । 6 नवम्बर एवं 11 नवम्बर 2025 को दो चरणों में आयोजित होने वाले इस चुनाव को लेकर सभी जगह उत्साह का माहौल है । लोकतंत्र के इस महापर्व को लेकर सरकार द्वारा जन - जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है । वोट देने एवं इससे होने वाले लाभ को लेकर कैंपेन चलाया जा रहा है । इसी क्रम में मैंने आज अपने विद्यालय में वोटर - जागरुकता चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित किया । हमारे विद्यालय के बच्चों द्वारा अपनी प्रतिभा एवं कला कौशल को दिखाने का उन्हें सुनदरा अवसर प्राप्त । मैंने बच्चों से चुनाव एवं इसकी सारी प्रक्रियाओं के बारे में अच्छी तरह से जानकारी प्रदान की । यह मतदान प्रत्यक्ष रूप से आम जनता द्वारा अपने पसंदीदा उम्मीदवार को चुनकर पूरी की जाती है इसके बारे में भी विस्तार से बताया । चुनाव में प्रयोग किए जाने वाले EVM मशीन एवं VVPAT बारे मे भी बच्चों को जानकारी दी । लोकतंत्र में चुनाव की महिमा एवं इससे हमारे देश और समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को भी बताया । मतदान बिना भेद - भाव एवं प्रलोभन के करना चाहिए इसके बारे में भी बच्चों को बताया । 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद लोग अपना नाम वोटर लिस्ट में शामिल करवा सकते हैं । बच्चो को यह भी समझाया कि वें अपने अभिभावकों को भी इस चुनाव में शामिल होकर अपने लोकतंत्र एवं समाज को नई दिशा प्रदान करने में अपनी महती भूमिका निभा सके ।

बच्चों को इसी क्रम में मैंने मतदाता शपथ भी दिलवाया ।
" हम , भारत के नागरिक , लोकतंत्र में अपनी पूर्ण आस्था रखते हुए यह शपथ लेते हैं कि अपने देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखेंगे तथा स्वतंत्र , निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते , निर्भीक होकर, धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय , भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे ।"
इन्हीं सब बातों के साथ मैंने अपनी मतदाता जागरूकता अभियान का समापन किया ।

प्रज्ञानिका साहित्य

बालिका शिक्षा - एक वरदान

बालिका शिक्षा है एक वरदान |
एक साथ फैलाती है दो घरों में ज्ञान ||
शिक्षित होंगी बालिकायें तो बढ़ेगा उनका सम्मान |
परिवार के साथ बढ़ेगा समाज और देश का भी मान ||

आओ बंद करे महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार |
अच्छे बर्ताव का दें हम उन्हें उपहार ||
दहेज़ जैसी सामाजिक बुराई को रखें दूर |
बालिकाओं को भी दे प्यार दुलार भरपूर ||

नहीं है बालिकायें , बालकों से पीछे |
आप उन्हें प्यार से सींचकर तो देखें ||
बेटे के जैसा ही वो भी रखेगी आपका ध्यान |
गर्भपात से न करें आनेवाली लक्ष्मी का अपमान ||

शिक्षित होगी बालिकायें तो सम्हालेगी देश की कमान |
घर और समाज का भी ऊंचा होगा मान सम्मान ||
परिवार का भी रख पाएगी अच्छे से ध्यान |
देश की भी बनेगी एक अलग पहचान ||

बालक बालिकायें हैं दक्ष एक समान |
फिर क्यों समझे हम उनको असमान ||
देकर देखे दोनों को मौका एक समान |
यह फैसला होगा आपके लिए एक वरदान ||

जिन्होंने भी बेटियों को प्यार से सींचा |
बेटियों ने झुकने न दिया उनका सर नीचा ||
आओ हम सब करके देखे एक प्रयोग |
बेटियों को भी करने दे उनकी विद्वता का भरपूर उपयोग ||

आनंद शंकर
UCCH MADHYAMIK VIDYALAYA
LAXMIPUR , BARARI , KATIHAR

मिलकर दीप जलाएँ

आओ खुशी मनाएँ।
मिलकर दीप जलाएँ।।

घना अँधेरा छाया।
धन्य अमावस आया।।
कहते सभी दिवाली।
इसकी कथा निराली।।
बच्चे हर्षित गाएँ।
मिलकर दीप जलाएँ।।०१।।

फूलझड़ी हम छोड़ें।
खूब पटाखे फोड़ें।।
बना रहे रंगोली।
मदमस्तो की टोली।
सजी दीप मालाएँ।
मिलकर दीप जलाएँ।।०२।।

माँ पकवान बनाई।
आती खूब मिठाई।।
बंद हुआ है शाला।
हमनें मस्ती पाला।।
गीत प्रेम की गाएँ।
मिलकर दीप जलाएँ।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा, पटना, बिहार।

प्रज्ञानिका साहित्य

लड्डू

गोल-गोल लड्डू,
खूब खाता गुड्डू ।
खाता चार-चार,
खाता बार-बार,
फिर भी ललचाए,
छुप कर वो खाए।
गोल-गोल लड्डू,
खूब खाता गुड्डू।
आठ-आठ खाया,
दर्द उसे रूलाया।
पास माँ के गया,
हाल वो बताया।
गोल-गोल लड्डू,
खूब खाता गुड्डू।
पेट माँ सहलायी,
वैद्य पास लायी।
डाक्टर चकराया,
कैसे ये खाया?
गोल-गोल लड्डू
खूब खाता गुड्डू
दवा उसे पिलाया,
उसको समझाया ।
कान पकड़ा गुड्डू,
कम खाऊँगा लड्डू ।
गोल-गोल लड्डू ,
खूब खाता गुड्डू।

रीतु प्रज्ञा
करजापट्टी, दरभंगा, बिहार

गाय हमारी संस्कृति की धरोहर

गाय हमारी संस्कृति की धरोहर,
गाय हमारी पालनहार।
देती दूध अमृत के जैसा,
भर देती घर में प्यार अपार।

गाय हमें देती है गोबर,
गोबर से बनती खाद महान।
खाद अगर पहुँच जाए खेतों में,
तो बंजर भूमि भी हो कल्याण।

गाय का गोमूत्र औषधि अमृत,
रोग मिटाए, तन हो निर्मल।
सेवा उसकी पुण्य का सागर,
हर धर्म में पाया है संबल।

गाय से जुड़ी है जीवन-धारा,
गांव की शान, कृषक की प्यारी।
गाय हमारी संस्कृति की मूरत,
भारत माता की अनमोल सवारी।

अंजू कुमारी,
शिक्षिका,
मध्य विद्यालय गंगवारा रूनीसैदपुर,
सीतामढ़ी, बिहार

प्रज्ञनिका साहित्य

शीर्षक : आओ मिलकर दीप जलाएं ।

आओ घर - घर दीप जलाएं
जाति धर्म सब भूल कर,
आओ जलाएं मिलकर
एक दीप प्यार का,
खुशियों की संसार का,
सरल - समरस व्यवहार का,
रोशनी के त्योहार का ।
प्रदेश की सीमा तोड़कर
आओ जलाएं मिलकर
एक दीप न्याय का,
बुद्धि - विवेक के पर्याय का
समुचित उपाय का,
जो मदद करे असहाय का ।
राग - द्वेष सब छोड़कर,
आओ जलाएं मिलकर
एक दीप ज्ञान का,
तर्क और विज्ञान का
इज्जत और सम्मान का
जगत के कल्याण का ।
लोभ - लालच त्याग कर
आओ मिलकर जलाएं
एक दीप रोजगार का,
कृषि और व्यापार का,
गरीबों के उद्धार का
व्यवस्था में सुधार का ।
सारी दूरियों को मिटाकर
आओ जलाएं मिलकर
एक दीप प्रेम के जीत की
नफरत के हार का
सामाजिक सौहार्द का,
मानवता जिंदाबाद का ।
जाति - धर्म सब भूलकर,
आओ जलाएं मिलकर
एक दीप प्यार का
खुशियों के संसार का
सरल - समरस व्यवहार का
रोशनी के त्योहार का ।

आशीष अम्बर
(विशिष्ट शिक्षक)
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
केवटी, दरभंगा

दीपक बनकर अँधियारों को हरने वाले शिक्षक हैं
हर बच्चे का जीवन रौशन करने वाले शिक्षक हैं

वरना तो वंचित रह जाते कितने बच्चे शिक्षा से
बच्चों का दामन शिक्षा से भरने वाले शिक्षक हैं

काम अगर हो बढ़िया तो फिर देते हैं शाबाशी भी
हर ग़लती पर कान हमारे धरने वाले शिक्षक हैं

अपने अनुभव से दिखलाते दुनिया की सच्चाई को
बच्चों ख़ातिर ख़ुद भी रोज़ निखरने वाले शिक्षक हैं

आने वाला कल बनता है बेहतर बच्चे-बच्चे से
और उन्हीं बच्चों को बेहतर करने वाले शिक्षक हैं

शिक्षक के कारण दुनिया की नज़रों में सब आए पर
सबकी ही नज़रों से आज उतरने वाले शिक्षक हैं

सत्येन्द्र गोविन्द
विद्यालय अध्यापक
रा०प्रा०बि० बखरी(उर्दू)

प्रज्ञनिका साहित्य

स्त्री भ्रम

क्यों समेट लिया है तूने खुद को
इस भ्रम की चार दिवारी में
कि ..स्त्री है दुनिया में तेरा मोल नहीं
जरा नजर उठा के देख तो ले
ये आज का नया जमाना है ।

चाहे देश की रक्षा का हो जिम्मा
या हो विज्ञान की बात
दुनिया भी यह मान गई
कि हम भी किसी से कम तो नहीं ..

बन सकती है तू भी इंदिरा
सोफिया कुरैशी हो या मैरी
सब की सब हैं तो महिला
जिनसे मिलता हमें हौंसला ,

अच्छा कुछ नहीं तो.....
अच्छा कुछ नहीं तो,

बस.. इतना तू बतला दे मुझको
जब मां ने तुझको जन्म दिया
उतना ही दर्द सहा होगा
जितना तेरे भाई में ,
हां, जितना तेरे भाई में ।

तो अब क्या!!

चल उठ खड़ी हो अपने दम पर
दिखला दे आज तू दुनिया को
गर ममता जैसा दिल है तेरा
तो है लक्ष्मीबाई जैसा बाहुबल भी
लक्ष्मीबाई जैसा बाहुबल भी।।

अमृता कुमारी
विद्यालय अध्यापक
उच्च माध्यमिक विद्यालय बसंतपुर सुपौल

हम शिक्षक हैं राष्ट्र निर्माता...!

हम शिक्षक हैं राष्ट्र निर्माता,
बच्चों के हैं भाग्य विधाता।

बच्चों को देते शिक्षा,संस्कार और अनुशासन का ज्ञान,
हम शिक्षक बनाते उनका जीवन मूल्यवान।

पढ़-लिखकर ये बच्चे बनेंगे महान,
तभी होगा हम शिक्षकों का सपना साकार।

हम शिक्षक हैं राष्ट्र निर्माता,
बच्चों के हैं भाग्य विधाता।

बच्चों को शिक्षित बनाएंगे,
हम अपना कर्तव्य निभाएंगे।

समाज के बीच शिक्षा का जागरूकता फैलाएंगे,
शिक्षा के प्रति बच्चों के हौंसला को बढ़ाएंगे।

शिक्षा हीं है जीवन का अनमोल उपहार,
शिक्षा ही करता सबके जीवन को साकार।

हम शिक्षक हैं राष्ट्र निर्माता,
बच्चों के हैं भाग्य विधाता।

मृत्युंजय कुमार
NPS खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चंपारण

प्रज्ञनिका साहित्य

मेरी पोषण वाली थाली : बाल कविता

माँ ने सजाये थाली में अनोखे रंग ,
पोषण थाली अब करेगी कुपोषण से जंग ।

मोटे अनाज देंगे हमें बल,
गेहूँ, चावल भरें संबल।

दाल हमें दे प्रोटीन प्यारा,
शक्ति का यह सच्चा सहारा।
हरी पत्तियाँ विटामिन लाएँ,
पालक, मेथी रक्त बढ़ाएँ।
खीरा, टमाटर, गाजर प्यारे,
विटामिनों के सागर सारे।
फलों में रस, विटामिन ढेर,
खाओ मौसमी फल , सेब, केला, नाशपाती और बेर ।
दूध से हड्डियों को बल मिलता,
कैल्शियम से तन खिलता।

थाली में संतुलित ये पाँच उत्पाद ,
ताकत, ऊर्जा, सेहत का राज़।

मखाना है हृदय का रखवाला,
सुपरफूड्स प्रोटीन से भरपूर निवाला।

सत्तू दे गर्मी में ठंडक प्यारी,
उर्जा से भर दे तन मन सारी ।
गिलोय, गुड़, अलसी के बीज और फाइबर,
रखें शरीर स्वस्थ, बने ताकतवर ।

हमेशा लोकल उत्पाद खाओ ,
तन मन को स्वस्थ बनाओ ।

हर दिन खाना ध्यान से खाओ,
पोषण थाली रोज घर पर बनाओ

अवधेश कुमार
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय रसुआर ,
मरौना , सुपौल

शंख नाद करो

उठो तुम! हुंकार भरो!
अन्याय का प्रतिकार करो!
भेद कर घन तिमिर को,
चहुँओर प्रकाश भरो!

छवि तोड़ तुम अबला की,
जियो पल-पल अब न मरो!
अब तक थीं चूड़ियाँ शोभती,
उन कर में कलम कटार धरो!

तोड़ पायल की बेड़ियाँ,
नित नव पथ पर पाँव धरो!
पोंछ आँसू आँख के उनमें,
इंद्रधनुषी रंग भरो!

नाप लो पग से गगन धरा,
वामन का तुम रूप धरो!
आकाश समा लो मुट्ठी में,
आओ उठो! सिंह नाद करो!

लिखो अपना नव अध्याय,
मन में नव उन्माद भरो!
उठो! आर्य पुत्रियों! उठो,
आओ उठो! शंख नाद करो!

डॉ उषा किरण
प्रधान शिक्षक
नव सृजित विद्यालय बवरिया
पहाड़पुर, पूर्वी चम्पारण

प्रज्ञनिका साहित्य

एक दीपक की क्रांति

निलेश कुमार मंडल
10+2th शिक्षक मनोविज्ञान
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय गौरीपुर चान्दन

एक छोटा-सा गाँव था – आलोकपुर।
वहाँ के लोग पहले बहुत खुशहाल थे, पर अब गाँव पर अंधकार छाया हुआ था। बिजली नहीं थी, रास्ते गंदे थे, और सबसे बड़ी बात – गाँव के लोग डर और निराशा में जी रहे थे।
भ्रष्ट सरपंच ने सबकी मेहनत की कमाई हड़प ली थी।
एक शाम, छोटी दिवाली के दिन, जब सबके घरों में सन्नाटा था,
एक घर में एक छोटा-सा दीपक जल उठा।
वह घर था सुमन दीदी का – जो गाँव के बच्चों को नि:शुल्क पढ़ाती थीं।
गाँव के लोग बोले –
> "दीदी, अब दीया जलाकर क्या होगा? अंधकार इतना गहरा है!"

सुमन दीदी मुस्कुराईं और बोलीं –
> "जब समाज अंधकार में डूबा हो, तो एक दीपक भी क्रांति की शुरुआत बन सकता है।"

फिर क्या था – उन्होंने बच्चों को बुलाया और कहा :
"आज हम सब मिलकर अपने गाँव की सफाई करेंगे, हर घर में एक दीपक जलाएँगे और कल की मुख्य दीपावली की तैयारी करेंगे।"
बच्चे निकल पड़े –
कूड़ा उठाया, दीवारें सजाईं, दीए जलाए। धीरे-धीरे गाँव वाले भी जुड़ते गए।
देखते ही देखते पूरा आलोकपुर उजाले से चमक उठा।
यह देखकर सरपंच गुस्से में आया –
> "तुम सब क्या कर रहे हो?"

सुमन दीदी ने शांत स्वर में कहा –
> "हम अन्याय और भय के अंत का उत्सव मना रहे हैं।
सत्य और साहस की जीत ही असली दीपावली है।"
उस दिन गाँव वालों ने निश्चय किया – अब वे डरेंगे नहीं, सच्चाई के साथ खड़े होंगे।
और कुछ ही दिनों में नया, ईमानदार नेतृत्व चुना गया।

विविध

यात्रा लिंगराज मंदिर की
द्वारा: अजय कुमार मीट , कटिहार

कलिंग,यह शब्द सुनते ही बिहारी होने के कारण मेरे मानस पटल पर इतिहास के कालखंड का वह पन्ना अनायास ही खुल जाता है। जिसमें एक सम्राट जिसका साम्राज्य पश्चिम में अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में वर्तमान म्यांमार तक था किन्तु उसकी राजधानी से ठीक दक्षिण में स्थित एक छोटे से राज्य ने उसे कभी सम्राट स्वीकार नहीं किया।जी हाँ, मैं भारतीय इतिहास के महान सम्राट अशोक की बात कर रहा हूँ। जिसके मन में यह टीस रही थी और इसके अंत के लिए उसने कलिंग पर आक्रमण कर दिया था।

इतिहासकार बताते हैं कि इस घनघोर युद्ध में कलिंग के सभी पुरुष सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गए तो राजकुमारी पद्मावती के नेतृत्व में स्त्री योद्धाओं की छोटी सी टुकड़ी ने अपने राज्य की स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए अशोक की बड़ी सेना के सामने मोर्चा सम्हाला और युद्ध भूमि में उपस्थिति हुई। युद्ध में हुए भयानक नरसंहार से व्यथित अशोक ने स्त्री सेना से नहीं लड़ने का निर्णय लिया और स्वयं को उनके सामने समर्पित कर अहिंसा और बौद्ध धर्म का मार्ग चुना।

यह घटना भारतीय इतिहास के सबसे प्रभावी घटनाओं में एक सिद्ध हुई। जिस कारण से भारत ने एक तरफ मानवता के उत्कर्ष को छूआ और शांति तथा अहिंसा के साथ ज्ञान का संदेश विश्व के कई अन्य देशों तक पहुंचाया। वहीं कुछ लोगों का यह भी मानना है कि, बाद में इन्हीं कारणों से दुर्दांत हूणों, शकों, मुगलों द्वारा भारत को भारत पर आक्रमण भी हुए।

कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ इन्फोर्मेशन टैक्नोलॉजी (KIIT)
से B.Tech हेतु जब छोटे पुत्र संस्कार सुमंत का चयन इस महाविद्यालय में हुआ तो इस संस्थान को देखने और महसूस करने की मेरी जिजीविषा प्रबल हो उठी।

विविध

कटिहार से भुवनेश्वर के लिए सीधी रेल सेवा सप्ताह में मात्र दो दिन ही उपलब्ध है। जिसमें स्थान सुरक्षित न हो पाने के कारण कटिहार से सियालदह और शालीग्राम से भुवनेश्वर की यात्रा को रेल सेवा में आरक्षित सीट ने काफी आसान बना दिया।
कटिहार से शाम सात बजे चलकर दूसरे शाम पांच बजे तक हम सपरिवार भुवनेश्वर पहुंच चुके थे। वर्षा ऋतु, रास्ते में हरे-भरे खेत, नारियल और केले के वृक्षों की प्रधानता संग बीच-बीच में छोटी-छोटी पहाड़ियों की उपस्थिति, जैसे एक गजब की मोहक छटा प्रस्तुत कर रही हो। स्वर्ण रेखा और महानदी के उफान पर सावन का असर प्रत्यक्ष दिख रहा था।
भुवनेश्वर,एक शहर जो प्राचीनता और आधुनिकता का संगम स्थल है और यह दोनों को बड़ी ही सहजता से खुलकर जीता भी है।एक तरफ प्राचीन मंदिर समूहों की उपस्थिति तो दूसरी ओर आधुनिकतम मॉल संस्कृति।एक तरफ शहर की दिवालों पर उड़ीया कला की स्पष्ट छाप तो दूसरी ओर नवयुवक - नवयुवतियों के पहनावे में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भी दिखा।
सपरिवार सुबह तैयार होकर सबसे पहले शिव को समर्पित विश्वविख्यात मंदिर लिंगराज मंदिर पहुंचा।मन को हजारों साल की तपस्या का जैसे फल मिल गया हो। अद्भुत शांति में डूबे इस मंदिर समूह की बात ही क्या है। अतीत से जुड़ाव होता ही ऐसा है,मन जैसे उस कालखंड में जाकर जीने लगता है।
7वीं शताब्दी में नींव पड़ने के बावजूद 11वीं शताब्दी के राजा ययाति को इसके निर्माण का श्रेय दिया जाता है। कलिंग स्थापत्य शैली बलुआ पत्थरों से निर्मित यह मंदिर उड़ीसा के विशिष्ट मंदिर वास्तुकला का सर्वोच्च उदाहरण है। मंदिर के भीतरी और बाहरी दिवालों पर विभिन्न देवी -देवताओं, पौराणिक कथाओं के संग पशु-पक्षियों की नक्काशी भी देखते ही बनती है।
लिंगराज मंदिर में पूजा-अर्चना के पश्चात स्टेशन से मात्र आठ किलोमीटर दूर स्थित उदयगिरि -खंडगिरि जुड़वां पहाड़ियों पर ईसापूर्व दूसरी शताब्दी की गुफाओं को देखने पहुंचे। एतिहासिक, स्थापत्य और धार्मिक दृष्टिकोण से ये गुफाएं काफी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कलिंग के राजा खारवेल के शासन काल में इन गुफाओं का निर्माण पत्थरों को काटकर-तराशकर किया गया है। ज्यादातर गुफाएं जैन साधकों को समर्पित हैं। जबकि कुछ गुफाओं में हिन्दू तथा बोद्ध आकृतियों से यह प्रमाणित होता है कि इनका भी यहाँ प्रभाव रहा है। गुफाओं में उत्कीर्ण मुर्तियां और शिलालेख न सिर्फ एतिहासिक, धार्मिक, स्थापत्य बल्कि शिलालेखीय दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।राजा खारवेल के शिलालेख विशेष रूप से पर्यटकों और शोधकर्ताओं को आकर्षित करते है, जो बहुत महत्वपूर्ण है।
पत्थरों को काटकर-तराशकर ध्यान - साधना हेतु निर्मित इन गुफाओं में जीवन के लिए अत्यावश्यक सुविधाओं का बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से ध्यान रखा गया है।सोने के लिए सिरहाने में थोड़ा ऊंचा चट्टानी भाग,गुफा द्वार पर पर्दे टांगने की दोहरी व्यवस्था, अत्यावश्यक पदार्थ रखने के लिए ताखा,जल निकासी हेतु नालों तक जैसी सुविधाओं की व्यवस्था,सभी का निर्माण पत्थरों को काटकर ही किया गया है।
आटो रिक्शा वाले ने पहले ही सावधान कर दिया था कि गुफाओं को देखने के लिए पहाड़ियों पर चढ़ने के पूर्व खाना या नाश्ता बिलकुल ही न करें वरना उल्टी की शिकायत होने से परिभ्रमण का सारा मजा समाप्त हो जाएगा।हम सबने उसकी सीख का भरपूर उपयोग करते हुए उतरकर ही बिना लहसुन - प्याज वाली सब्जी से बजे थाली का आनंद लिया और प्रथम दिन के प्रवास पूर्ण कर अपने होटल लौट आए।

प्रवाहका दूसरा दिन कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ इन्फोर्मेशन टैक्नोलॉजी, विश्वविद्यालय के नाम रहा। अपने नए छात्रों के स्वागत को तैयार यह विश्वविद्यालय अपने पूर्ण वैभव में दिखा। साफ-सुथरा, हरा-भरा व्यवस्थित 160एकड़ में फैला यह विश्वद्यालय का कैम्पस पूर्णतः अत्याधुनिक सुख-सुविधाओं से लैस भवन, प्रयोगशाला, इंटेलिजेंट ई- केम्पस, वाई-फाई आप्टिकल फाइबर नेटवर्क, विडियो काउंसिल जैसी सुविधाएं यहां उपलब्ध है। आगंतुकों को भ्रमण कराने के लिए जगह -जगह ई रिक्शा की सुविधा थी। नामांकन की औपचारिकता को काफी सरल और सहज बनाया गया था।सारी औपचारिकताएं पूर्ण कर वापस होटल और फिर सुबह की ट्रेन से हावड़ा होते हुए वापस कटिहार अपने निज आवास पर।
सच कहूं तो यह यात्रा न सिर्फ भारत के समृद्ध प्राचीन सभ्यता -संस्कृति के दर्शन की थी बल्कि आधुनिक भारत के निर्माण की जरुरतों को पूरा करने में लगे नवयुवक -नवयुवतियों को तैयार करने वाले अत्याधुनिक संस्थान के दर्शन और उसमें अपनी सहभागिता को समर्पित रही। आधुनिक भारत के निर्माण को समर्पित ऐसे ही संस्थान हमारे आधुनिक मंदिर भी हैं।इस यात्रा ने हमें हमारे समृद्ध सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और धार्मिक पहलुओं से न सिर्फ परिचय करवाया बल्कि उसके अत्याधुनिक विकल्प के प्रति जागरूक कर उसमें सहभागिता हेतु प्रोत्साहित भी किया।

हिमाद्री शाण्डिल्य
UMS Vanipur block-
Manihari, Dist -ktr

हम जानते हैं कि हर बच्चे में कोई ना कोई प्रतिभा छिपी होती है । वे दुनिया को बदलने की ताकत रखते हैं क्योंकि वे दुनिया को एक अलग नजर से देखते हैं । आईए आज हम कुछ इन्हीं बाल कलाकारों को करीब से जानने का प्रयास करते हैं-

कक्षा 8 में पढ़ने वाली छात्रा पिंकी को पेंटिंग,क्राफ्टिंग ,क्ले मोल्डिंग इत्यादि करना बहुत रोचक लगता है।वह अपने विद्यालय में मीना मंच की एक सदस्य भी है।प्रत्येक सप्ताह होने वाली बैठक में वह अपनी प्रतिभा का भरपूर उपयोग करती है और सहेलियों के साथ मिलकर कुछ ना कुछ नया करने का प्रयास करती है। कुछ दिनों पहले हुई बैठक में उसने कुछ अनोखे प्रयास किए जैसे की बटन का प्रयोग कर रंगोली ,मूंग का प्रयोग कर बत्तख ,पेंसिल के छिलकों से घोंसला और उसमें चिड़िया,आइसक्रीम स्टिक से फूलों के गुलदस्ते और रंग-बिरंगे क्ले से श्री गणेश की प्रतिमा इत्यादि जैसी अनूठी चीजें बनाकर शिक्षकों के साथ साझा किया। पिंकी की अनूठी प्रतिभा ने पूरे विद्यालय में उसकी अलग पहचान बना दी है,अबवह दूसरे बच्चों को भी सीखने के लिए प्रेरित करतीहै ।

कक्षा 7 में पढ़ने वाला छात्र नैतिक बड़े होकर एनवायरमेंटलिस्ट बनना चाहता है ।उसे पेड़ पौधों ,पशु पक्षियों से बहुत लगाव है। नैतिक ने अपने घर के आसपास ,अपने गांव में अलग-अलग जगह पर बहुत सारे पेड़ लगाए हैं और सिर्फ लगाए ही नहीं वह उनका बहुत ध्यान भी रखता है ।नैतिक अपने विद्यालय में इको क्लब का एक सदस्य है ।जब उसे "एक पेड़ मां के नाम" पहल से संबंधित बातें अपने शिक्षकों और अपने दोस्तों से सुनने को मिली तो उसने मन में ठान लिया कि वह इस पहल को सफल बनाने का पूरा प्रयास करेगा। उसने पहले अपने विद्यालय का एक मानचित्र तैयार किया ,फिर पौधों को सुसज्जित तरीके से लगाने के लिए स्केच तैयार किया और उसे अपने शिक्षकों के साथ साझा किया। नैतिक की स्केच सबको बहुत अच्छी लगी ।फिर नैतिक ने सबके साथ मिलकर पौधे लगाए और विद्यालय के प्रांगण को हरियाली से भरने में अपना योगदान निभाया ।आज विद्यालय के मेन गेट से अंदर आते ही हमें एक सुंदर सा हरा भरा छोटा सा उद्यान देखने को मिल सकता है। नैतिक के इस प्रयास की सराहना विद्यालय सहित पूरे गांव में होने लगी है ,पर नैतिक को तो अपने अगले लक्ष्य का इंतजार है ।

~कक्षा 1 में पढ़ने वाले श्रेयम और कक्षा 2 में पढ़ने वाले स्वास्तिक को एक आर्मी ऑफिसर बनना है। इस बार मनाए गए स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वे दोनों आर्मी वाली अटायर में विद्यालय आए ।जब एक शिक्षिका ने उनसे पूछा कि आपने आर्मी वाली ड्रेस क्यों पहनी है तब उनके उत्तर ने सभी का दिल जीत लिया दोनों बच्चों ने दृढ़ता से मैडम के सवाल का एक साथ उत्तर उत्तर दिया कि मैं सीमा पर जाकर अपने देश की रक्षा करना चाहता हूं इसलिए मैं एक आर्मी ऑफिसर बनना चाहता हूं ।

कभी-कभी हम साधारण सी दिखने वाली वस्तुओं में भी कुछ अनोखी चीज ढूंढ लेते हैं अगर हम अपनी आंखें खुली रखें ,प्रकृति से दोस्ती करें और वर्तमान को एक उपहार समझे।अपनी प्रतिभा का ज्ञान हमें अपने स्व अवलोकन से हो सकता है प्रकृति हमें बहुत कुछ सिखाती है ।यह दुनिया बहुत ही रंग बिरंगी चीजों से मिलकर बनी हुई है बस जरूरत है हमें अपनी नजरों को दिशा देने की।

योग एवं स्वास्थ्य

WHO के अनुसार मानव का शरीर, मन, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से स्वस्थ होना ही स्वास्थ्य की परिभाषा है।

आचार्य सुश्रुत के अनुसार स्वास्थ्य की परिभाषा:-
समदोष: समाग्निश्च समधातुमलक्रिय:।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमना: स्वस्थ इत्यभिधीयते ।।

समदोष:

अर्थात शरीर के सभी क्रियाओं को संचालित करने वाले तीनों दोष (वात, पित्त एवं कफ) जब सम अवस्था में रहते हैं तब शरीर कि वह स्वस्थ अवस्था कहलाती है। अर्थात त्रिदोष का सम होना आवश्यक है।

समाग्नि:

मानव शरीर में पंच भूताग्नि पाँच मूल तत्वों में पाँच अग्नियाँ होती हैं (पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु और आकाश)। हमारे शरीर की प्रत्येक कोशिका पाँच महाभूतों या पाँच मूल तत्वों से बनी होती है। स्वाभाविक रूप से, प्रत्येक कोशिका (धातु परमाणु) में ये पाँच भूताग्नि भी होती हैं। धात्वाग्नि(रस, रक्त ,मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र) एवं जठराग्नि इन 13 अग्नियों की समान स्थिति ही अन्न का सम्यक पाचन करती है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

समधातु:

मानव शरीर में सात धातुएं हैं। सभी धातुओं से शरीर बलवान एवं पुष्ट बनता है।ये शरीर के मूल निर्माण खंड हैं, जो भोजन से प्राप्त पोषण से बनते हैं और शरीर को संरचना, पोषण और कार्य करने की क्षमता प्रदान करते हैं।जब इन धातुओं में न्यूनता या अधिकता होती है तो शरीर दुबलापन या मोटापा आदि लक्षण प्रकट होकर अस्वस्थ हो जाती है। अत: हमारे शरीर में सभी सम धातु का स्वस्थ होना आवश्यक है।

सममलक्रिया:

हमारे शरीर से निकलने वाले मल यथा मल, मूत्र, पसीना का निर्माण एवं उनका सतत् नियमित रूप से शरीर से निष्कासन होना स्वस्थ का लक्षण है।

मन की प्रसन्नता:

मन में तीन प्रकार की यथा सात्विक, राजसिक, तामसिक प्रसन्नता होती है स्वस्थ व्यक्ति के मन में सदैव प्रसन्नता का भाव रहता है यही स्वास्थ्य का लक्षण है।

इंद्रियों की प्रसन्नता:

शरीर में पांच इंद्रियों एवं पांच कर्मेंद्रियां अपने कार्य को सामान्य रूप से प्रसन्नता पूर्वक करते हैं तो स्वस्थ की स्थिति बनती है।

आत्मा की प्रसन्नता:

नि:स्वार्थ भाव से सामाजिक सेवा कार्य करने से, परोपकार के भाव से और दीन दुखियों की मदद करने से आत्मा की प्रसन्नता होती है जो स्वस्थ स्वास्थ्य का लक्षण है।

द्वारा:- मृत्युंजय कुमार, कटिहार

एक पेड़ माँ के नाम

विप्लव कुमार
उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय
अरिहाना कटिहार

“एक पेड़ माँ के नाम” प्रकृति से जुड़ने का भावनात्मक प्रयास
विद्यालयों में चल रहा “एक पेड़ माँ के नाम” कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय पहल है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना विकसित हो रही है। इसके अंतर्गत प्रत्येक विद्यार्थी अपनी माँ के नाम एक पेड़ लगाता है, जिससे माँ के प्रति प्रेम और सम्मान के साथ-साथ पेड़ लगाने का भावनात्मक संबंध भी जुड़ जाता है।कार्यक्रम की शुरूवात हुई तो मैंने अपनी बड़ी मां,विद्यालय से सेवानिवृत शिक्षिका स्व सुचित्रा राय के नाम विद्यालय में फलदार पेड़ लगाए। विद्यालय जाते हीं सबसे पहले उन पौधों को देखता हूं कि वे सुरक्षित है या नहीं।ये एक भावनात्मक जुड़ाव होता है।माँ जीवन का आधार होती हैं और पेड़ भी हमारे जीवन का आधार है। यही इस अभियान का सुंदर संदेश है। कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप है, जिसमें विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता और सतत जीवन शैली अपनाने पर बल दिया गया है। विद्यालयों के पर्यावरण क्लब (इको क्लब) इस अभियान को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विद्यार्थी पेड़ लगाने के साथ उसकी नियमित देखभाल भी करते हैं, जिससे उनमें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और प्रेम की भावना मजबूत होती है।“यह अभियान पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक प्रेरणादायक और अभूतपूर्व कदम है।

धनंजय कुमार धर्मेंद्र
मध्य विद्यालय बम्हवार
भोजपुर

"एक पेड़ माँ के नाम" एक अत्यंत भावनात्मक और पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य प्रकृति संरक्षण के साथ-साथ मातृत्व के प्रति सम्मान प्रकट करना है | यह कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा हरित भारत अभियान (Green India Mission) के अंतर्गत प्रायोजित किया गया है तथा इस वर्ष "एक पेड़ माँ के नाम 2.0" के नाम से इसे विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून 2025 को शुरू किया गया | इस अभियान का मूल संदेश है– “प्रकृति हमारी माँ है, उसकी रक्षा हमारा कर्तव्य है|” इस योजना के तहत प्रत्येक नागरिक को अपनी माँ के सम्मान में कम से कम एक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया जाता है |
बिहार शिक्षा विभाग ने इसकी सफलता में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है | विभाग ने विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शिक्षण संस्थानों के माध्यम से छात्रों को इस पहल से जोड़ा है | विद्यार्थियों को यह संदेश दिया गया है कि जैसे माँ हमें जीवन देती है, वैसे ही पेड़ पृथ्वी को जीवन देते हैं | शिक्षा विभाग ने "एक पेड़ माँ के नाम" कार्यक्रम को विद्यालय पर्यावरण क्लबों Eco Clubs for Mission Life के साथ जोड़ा है, ताकि विद्यार्थी स्वयं पौधारोपण करें और उसके संरक्षण की जिम्मेदारी भी निभाएँ |
बिहार के सभी जिलों में इस योजना के अंतर्गत लाखों पौधे लगाए जा चुके हैं | विद्यालयों में विशेष हरित शपथ कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जहाँ विद्यार्थी अपनी माताओं के नाम एक पेड़ लगाने की प्रतिज्ञा लेते हैं | इस प्रकार यह अभियान न केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम बना है, बल्कि माँ और प्रकृति दोनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का भावनात्मक प्रतीक भी बन गया है |

संतोष कुमार शर्मा
उत्क्रमित उच्च विद्यालय बड़ी
नाकी, सन्हौला, भागलपुर

विद्यालयों ने इस योजना को एक सशक्त आंदोलन का रूप दिया है।
शिक्षक अपने विद्यार्थियों को न केवल पौधे लगाने की सीख दे रहे हैं, बल्कि स्वयं उदाहरण बनकर मार्गदर्शन कर रहे हैं।
छात्र अपने घरों और विद्यालय परिसर में “माँ के नाम” का पेड़ लगाकर उससे गहरा भावनात्मक जुड़ाव महसूस कर रहे हैं।
हर पौधे के साथ जुड़ी एक छोटी कहानी, एक नाम और एक स्मृति ने इन नन्हे हाथों में जिम्मेदारी का एहसास जगा दिया है।
अब यह केवल पेड़ नहीं, प्रेम और संवेदना से सिंचित “जीवन” है
आज यह पहल अनेक जिलों में सफलता का प्रतीक बन चुकी है।
विद्यालयों, शिक्षकों, स्वयंसेवी संस्थाओं और स्थानीय प्रशासन के सहयोग से हजारों पेड़ रोपे जा चुके हैं।हालाँकि कुछ स्थानों पर पौधों की देखभाल और जल संसाधन की कमी चुनौतियों के रूप में सामने आई है,पर यह भी सिखाता है कि किसी भी योजना की सफलता उसके आरंभ में नहीं, बल्कि उसकी निरंतरता और सामूहिक जिम्मेदारी में निहित होती है।

एक पेड़ माँ के नाम

धरती पर जीवन का आधार है - वृक्ष। वे न केवल हमें ऑक्सीजन देते हैं, बल्कि छाया, फल, फूल, औषधि, वर्षा और जीवन का संतुलन भी बनाए रखते हैं। अगर ध्यान से देखा जाए तो पेड़ हमारे जीवन में "माँ" की तरह हैं – जो बिना किसी स्वार्थ के केवल देती ही जाती है। "एक पेड़ माँ के नाम" केवल एक शीर्षक नहीं, बल्कि एक भावना है – जो हमें यह सोचने पर विवश करती है कि जिस प्रकार माँ अपने बच्चों को प्रेम, सुरक्षा और जीवन देती है, उसी प्रकार एक पेड़ भी मानवता को जीवनदान देता है।
जिस प्रकार माँ अपने आँचल में बच्चे को सहेजती है, उसी तरह धरती का आँचल पेड़ों से भरा है। पेड़ हमारे पर्यावरण का हृदय हैं। वे न केवल ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं, बल्कि कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके पृथ्वी को शुद्ध रखते हैं। पेड़ों के बिना जीवन की कल्पना वैसी ही है जैसे माँ के बिना बच्चा – अधूरा, असुरक्षित और निः सहाय।

पेड़ का हर अंग किसी न किसी रूप में जीवन देता है – उसकी जड़ें धरती को थामे रहती हैं, तना हमें आश्रय देता है, पत्ते हवा को शुद्ध करते हैं, फूल सुंदरता फैलाते हैं और फल हमारे भोजन का हिस्सा बनते हैं। जैसे माँ का हर कर्म केवल परिवार के सुख के लिए होता है, वैसे ही पेड़ का हर कार्य प्रकृति की सेवा में समर्पित होता है।
माँ अपने बच्चे के लिए अपने सुखों का त्याग करती है। उसी प्रकार पेड़ भी अपने फल, फूल और पत्ते हमें देकर स्वयं नंगे हो जाते हैं। वे कभी शिकायत नहीं करते। गर्मी की तपती दोपहर में जब धूप सिर पर चुभती है, तब पेड़ की छाया माँ के आँचल की तरह राहत देती है। जब वर्षा होती है, तो पेड़ अपने तने को भिगोकर भी पक्षियों और जीवों को सुरक्षा देता है।
यदि हम अपनी बचपन की स्मृतियों को याद करें, तो पाएंगे कि हमारे घर के आँगन में कोई न कोई पेड़ अवश्य होता था – नीम, आम, तुलसी, पीपल या बरगद का। वह पेड़ माँ की तरह हमारे परिवार का हिस्सा बन जाता था। माँ उस पेड़ को भी अपने बच्चों की तरह संभालती थी। हर सुबह तुलसी पर जल चढ़ाना, नीम की छाया में बैठना या आम के पेड़ से झूला बाँधना – ये सब हमारे जीवन की सुखद स्मृतियाँ हैं।
पेड़ हमें केवल जीवन नहीं देते, बल्कि जीवन की सुरक्षा भी करते हैं। वे वर्षा लाते हैं, मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, हवा को शुद्ध करते हैं, पक्षियों को घर देते हैं, और धरती के तापमान को नियंत्रित रखते हैं। जैसे माँ अपने बच्चे को हर खतरे से बचाती है, वैसे ही पेड़ पृथ्वी को जलवायु संकटों से बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आज के औद्योगिक युग में पेड़ों की स्थिति माँ की तरह ही उपेक्षित होती जा रही है। शहरों के विस्तार, सड़क निर्माण, भवनों और कारखानों के कारण जंगल कट रहे हैं। पेड़ों के बिना धरती का संतुलन बिगड़ रहा है – वर्षा कम हो रही है, तापमान बढ़ रहा है, हवा प्रदूषित हो रही है।

माँ की तरह पेड़ भी सब कुछ सह रहे हैं – धुआँ, प्रदूषण, गर्मी, और मनुष्यों का लोभ। लेकिन वे फिर भी हमें ऑक्सीजन दे रहे हैं, क्योंकि उनकी प्रकृति देना है। हम इंसान उनकी ममता को भूलते जा रहे हैं।
दोनों जगह बिना शर्त सुकून मिलता है। माँ और पेड़ दोनों यह नहीं पूछते कि तुम कौन हो, कहाँ से आए हो। वे बस देते हैं – छाया, प्रेम, और शांति। यही उनका धर्म है।
हर वर्ष "मातृ दिवस" पर हम अपनी माँ को उपहार देते हैं, लेकिन धरती माँ और वृक्ष माँ के लिए हम क्या करते हैं?
अगर हम सच में मातृत्व का सम्मान करना चाहते हैं, तो पेड़ों की रक्षा ही सबसे बड़ी पूजा है।
हर इंसान को हर साल कम से कम एक पेड़ लगाना चाहिए।
बच्चों को पेड़ों से जोड़ना चाहिए, ताकि वे बचपन से प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनें।
त्योहारों में पेड़ों की रक्षा का संदेश देना चाहिए, न कि सजावट के लिए उन्हें काटना।
स्कूलों, मंदिरों, और समाज के हर हिस्से में वृक्षारोपण को संस्कार बनाना चाहिए।

"पेड़ बचाओ, माँ को बचाओ"

पेड़ और माँ दोनों जीवन के दो रूप हैं। एक जन्म देती है, दूसरी जीवन को बनाए रखती है। माँ के बिना बच्चा अनाथ होता है और पेड़ों के बिना पृथ्वी बंजर। इसलिए अगर हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए सुखद भविष्य चाहते हैं, तो हमें दोनों की रक्षा करनी होगी।

धरती की हर साँस पेड़ से जुड़ी है। जब हम किसी पेड़ को काटते हैं, तो वास्तव में अपने ही भविष्य को काटते हैं। इसलिए आज आवश्यकता है कि हर व्यक्ति यह प्रण ले –

पेड़ हमारे जीवन की हर साँस में बसते हैं। उनका अस्तित्व ही हमारी उपस्थिति की गारंटी है।
अगर हर इंसान एक पेड़ लगाए और उसे माँ की तरह संभाले,
तो धरती फिर से हरी हो जाएगी, हवा फिर से सुगंधित होगी,
और मानवता फिर से माँ की गोद में शांति पाएगा।

भोला प्रसाद शर्मा
डगरूआ, पूर्णिया(बिहार)

सुर्खियां

मृत्युंजय कुमार

प्रारंभिक विद्यालयों में भाषा, गणित व विज्ञान विषय को लेकर लगेगा मेला

विभाग ने मेले के संबंध में सभी **जिला शिक्षा पदाधिकारियों** को दिया निर्देश

निर्णय

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : राज्य के सभी 71 हजार प्रारंभिक विद्यालयों में हर तीन माह पर भाषा, गणित और विज्ञान विषयक मेला लगेगा। इसमें तमाम बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार गतिविधियां कराई जाएंगी और प्रदर्शनी भी लगायी जाएगी। इस संबंध में प्राथमिक शिक्षा निदेशक साहिला ने सभी जिला शिक्षा पदाधिकारियों और जिला कार्यक्रम

- यह त्रैमासिक मेला महीने के दूसरे सप्ताह में किया जाएगा आयोजित
- हिंदी भाषा में कक्षा एक के बच्चे अक्षरों को उनके ध्वनि के साथ करेंगे मिलान

11 अक्टूबर को प्रारंभिक विद्यालयों में होने वाली पीटीएम हुई स्थगित

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : चुनाव आचार संहिता लागू होने के कारण 11 अक्टूबर को राज्य के सभी प्रारंभिक विद्यालयों में निर्धारित अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी (पीटीएम) को स्थगित कर दिया गया है। इस संबंध में शिक्षा विभाग के उप निदेशक प्रफुल्ल कुमार मिश्र ने मंगलवार को सभी जिला शिक्षा

इसके मुताबिक छह अक्टूबर से आचार संहिता प्रभावी हो गई है। ऐसे में 11 अक्टूबर को सभी प्रारंभिक विद्यालयों में आयोजित की जाने वाली अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी (पीटीएम) के सफल आयोजन में व्यावहारिक कठिनाई होने की संभावना है। इसके पहले दुर्गापूजा के दौरान पत्र जारी कर कहा था कि सितंबर और

प्राचीन मेलों से मखाना की खेती तक पढ़ेंगे बच्चे, पूरक किताबें तैयार होंगी

पटना, कार्यालय संवाददाता। बिहार के स्कूली बच्चों को अब अपने राज्य के प्राचीन मेलों से लेकर लीची और मखाना की खेती के बारे में भी पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके साथ ही वे बिहार के महान कवियों, लेखकों, साहित्यकारों और लोक कलाओं से भी परिचित होंगे। इसके लिए राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) द्वारा सामाजिक विज्ञान की विशेष पूरक पुस्तकें तैयार की जा रही हैं, जिनमें इन सभी विषयों को शामिल किया जाएगा। ये पुस्तकें दो

06 से कक्षा आठ के लिए किताबें आएंगी पहले चरण में

- बिहार के बड़े इतिहासकारों के मार्गदर्शन में किताबें की जाएंगी तैयार
- एनसीईआरटी की किताबों के साथ इसे पूरक किताब के रूप में दिया जाएगा

70 से 80 पन्नों की पूरक किताब होगी

चूंकि बच्चों पर पहले से ही अपने शैक्षणिक पाठ्यक्रम का दबाव होता है इसलिए इस पुस्तक को अत्यधिक विस्तृत नहीं बनाया जाएगा। विशेषज्ञों की एक टीम पुस्तक में केवल उन्हीं तथ्यों और जानकारियों को शामिल करेगी जो बच्चों के लिए आवश्यक और उपयोगी हैं। ये

एनसीईआरटी के साथ ही पढ़ेंगे

इन पूरक पुस्तकों को एनसीईआरटी की किताबों के साथ ही पढ़ाया जाएगा, ताकि छात्रों का सामान्य ज्ञान मजबूत हो सके और वे बिहार के बारे में जानने से वंचित न रहें। इन पुस्तकों को बिहार के जाने-माने इतिहासकारों और विषय विशेषज्ञों की एक समिति की निगरानी में तैयार की जाएगी। इसका

की पढ़ाई शुरू कराने की तैयारी

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : विधानसभा चुनाव के बाद राज्य के सभी 31 हजार 297 मध्य विद्यालयों में कंप्यूटर की पढ़ाई शुरू कराने की तैयारी हो रही है। इसके लिए शिक्षा विभाग ने कार्ययोजना तैयार की है। हालांकि, पहली बार मध्य विद्यालयों में लागू होने जा रही कंप्यूटर शिक्षा को एक विषय के तौर पर पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। यह व्यवस्था अप्रैल से जब नया शैक्षणिक सत्र शुरू होगा, तब लागू कराया जाएगा। बच्चों को कंप्यूटर के बेसिक नालेज पर आधारित किताबें भी उपलब्ध कराई

- शिक्षा विभाग की ओर से कार्ययोजना तैयार
- छठी से आठवीं कक्षा के दी जाएगी कंप्यूटर शिक्षा
- बच्चों को उपलब्ध होंगी कंप्यूटर किताबें भी

छठी, सातवीं और आठवीं कक्षा में कंप्यूटर शिक्षा दी जाएगी। इसके बाद तीसरी, चौथी और पांचवीं कक्षा के बच्चों को कंप्यूटर के बारे में बेसिक नालेज दिया जाएगा। 2027

विद्यालयों में एक करोड़ 22 लाख से ज्यादा बच्चे कंप्यूटर शिक्षा का लाभ उठा सकेंगे। वर्तमान में बिहार सरकार द्वारा राज्य के सभी 9,430 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक

हिन्दुस्तान

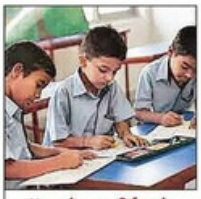

में खोजे जाएंगे ईशान जैसे बच्चे, एआई की मदद से बनेंगे

- डिस्लेक्सिया पीड़ित बच्चों की पढ़ाई के लिए सीबीएसई स्कूलों में विशेष पहल
- सभी स्कूलों के प्राचार्य और शिक्षकों को मिलेगी ट्रेनिंग, 27 से होगी शुरुआत
- बच्चों की पहचान से लेकर इन्हें पढ़ाने में एआई का उपयोग करना सीखेंगे

एआई से ऐसे होगी डिस्लेक्सिया पीड़ित बच्चों की मदद

राज्य के 836 विद्यालयों में सोशल साइंस किट दी जाएगी

बच्चे मॉडल से वर्षा जल संचयन के बारे में जानेंगे

पटना, कार्यालय संवाददाता। बिहार के सरकारी स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था में एक बड़ा और सकारात्मक बदलाव होने जा रहा है। अब छात्र केवल किताबों तक सीमित नहीं रहेंगे बल्कि उन्हें सामाजिक विज्ञान के विषयों को प्रैक्टिकल तरीकों से समझने का मौका मिलेगा। इसके तहत राज्य के 836 चयनित स्कूलों में सोशल साइंस किट उपलब्ध कराई जाएंगी। इससे शिक्षा को अधिक रुचिकर व अनुभवात्मक बनाया जाएगा।

इन किटों में वर्षा जल संचयन से लेकर भूकंप के कारणों तक के लाइव मॉडल शामिल होंगे, जिन्हें कक्षा में प्रदर्शित कर छात्र इन अवधारणाओं को प्रत्यक्ष रूप से समझ सकेंगे। मॉडल से बच्चे यह आसानी से जान सकेंगे कि भूकंप क्यों आता है या बारिश के पानी को कैसे संरक्षित किया जा सकता है।

यह पहला मौका है जब पटना सहित पूरे राज्य के स्कूलों में इस तरह की शैक्षणिक किट उपलब्ध कराई जा रही हैं। प्रत्येक किट में लगभग 24 प्रकार के मॉडल, उपकरण और टीचिंग एड्स होंगे, जो मुख्य रूप से इलेक्ट्रॉनिक होंगे।

मॉडल बेस्ड लर्निंग से बच्चों को ये होगा फायदा

- रटने की आदत में कमी
- बोरिंग नहीं, मजेदार बनेगा विषय
- क्लासरूम में जिज्ञासा बढ़ेगी
- किताबी ज्ञान और असली दुनिया से होगा जुड़ाव
- समूह में काम करना और आत्मविश्वास बढ़ेगा

इससे छात्रों को किताबों से बाहर निकालकर गतिविधि-आधारित शिक्षा की ओर प्रेरित किया जाएगा। स्कूलों को किट उपलब्ध कराने के बाद शिक्षकों को

ये किट सरकारी स्कूलों को कराए जाएंगे उपलब्ध

- सेट ऑफ रॉक्स
- भूकंप का मॉडल
- ज्वालामुखी मॉडल
- सीस्मोग्राफ मॉडल
- चंद्रमा की कलाएं
- वायु दिग्दर्शक आदि

वैज्ञानिक-व्यावहारिक सोच को मजबूती मिलेगी

शिक्षा विभाग की इस पहल से न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आएगी बल्कि छात्रों की वैज्ञानिक समझ और व्यावहारिक सोच को भी मजबूती मिलेगी। अब वे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अवधारणाओं को सिर्फ पढ़ने तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि उन्हें व्यावहारिक तौर पर देख और समझ पाएंगे। इससे न सिर्फ उनकी समझ बढ़ेगी बल्कि विज्ञान के प्रति रुचि जगेगी। इससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। शिक्षकों को इन किटों के प्रभावी उपयोग और उन्हें पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

शिक्षा-शिक्षकों के प्रति मेरा स्नेह बना रहेगा

बोले सिद्धार्थ

पटना, हिब्यू। विकास आयुक्त बनाए गए डॉ. एस सिद्धार्थ ने शिक्षकों से कहा कि जब मैं शिक्षा विभाग से विदाई लेकर एक नई जिम्मेदारी की ओर अग्रसर हो रहा हूँ, तो मेरा हृदय भावनाओं से भरा हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में आप सभी के साथ मिलकर बिहार में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जैसे महत्वाकांक्षी प्रयासों पर कार्य करना मेरे जीवन का एक अमूल्य अनुभव रहा है।

निपुण संवाद के इस अगस्त अंक के माध्यम से मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने शिक्षा की इस कठिन राह को सेवा और समर्पण के भाव से अपनाया। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि बिहार की शिक्षा-यात्रा आपके उत्साह और निष्ठा से नई ऊंचाइयों को स्पर्श करती रहेगी। यद्यपि मेरी प्रशासनिक भूमिका बदल रही है, किंतु शिक्षा और शिक्षकों के प्रति मेरा स्नेह व विश्वास सदा अडिग रहेगा। आप इसी तरह बच्चों के जीवन में सीखने की लौ जलाते रहें

फोटो ऑफ़ द डे

UMS असलान रामपुर
भोजपुर
कृष्णकांत जी

काली स्थान अ. जा. टोल,
गंगेली, के. नगर, पूर्णियाँ
रानी कुमारी

प्राथमिक विद्यालय हासिमपुर
बालक, बरारी, कटिहार
शिक्षिका- वंदना

म वि पिस्ता जगदीशपुर भागलपुर
श्रीमती अंजना कुमारी झा और
श्रीमती आशा कुमारी

प्राथमिक विद्यालय बीरा
मिथुन कुमार

UMS. BHATOURIYA HASANGANJ KATIHAR
मधु कुमारी

NPS खुटौना यादव टोला, पताही, पूर्वी चंपारण
शिक्षक:- मृत्युंजय कुमार

फोटो ऑफ़ द डे

प्राथमिक विद्यालय काली स्थान अ. जा. टोल, गंगेली, के. नगर, पूर्णिया
रानी सिंह

म वि पिस्ता जगदीशपुर भागलपुर
श्रीमती आशा कुमारी

PRIMARY SCHOOL, PAKARI
TEACHER NAME- ANAMIKA KUMARI

राजकीय प्राथमिक मकतब कबई नयाटोल, विद्यापतिनगर, समस्तीपुर
मेराज रज़ा

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

अक्टूबर से दिसम्बर 2025

www.teachersofbihar.org

अगर आप एक शिक्षक या शिक्षा के अन्य हितधारक हैं और शिक्षा में अपने नवाचार, अनुभव या विचारों को साझा करना चाहते हैं, तो 'प्रज्ञानिका' आपके लिए एक बेहतरीन मंच है।

इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने शैक्षिक प्रयोगों, अध्यापन पद्धतियों और नवाचारों को पूरे देश में पहुंचा सकते हैं।

https://chat.whatsapp.com/Ko2ST5AI7ohGWj1v3Ff4On

हमसे जुड़ने के लिए उपर दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें

PRAGYANIKA WhatsApp group

Facebook Group @teachersofbihar

X @teachersofbihar

Instagram @teachersofbihar

YouTube @teachersofbihar

@group/teachersofbihar

@teachersofbihar

@teachersofbihar

@teachersofbihar